आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902
डाक पंजीयन RJ/UD/29-150/2017-2019

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जन संवाद का पाक्षिक

वर्ष 3 | अंक 08 | उदयपुर मंगलवार 01 मई 2018 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

सृष्टि के केन्द्र में छतरी की डंडी की तरह नाग

इस सृष्टि की रचना के पीछे बड़ा अद्भुत इतिहास छिपा है। धरती, आकाश, हवा, पानी सबके सब एक-दूसरे से बंधे हुए हैं। आकाश को वायु ने थाम रखा है तो वायु को धरती थामे हुए है। धरती को शेषनाग अपने पर टिकाये हुए है तो शेषनाग कश्यप पर आसीन है। कश्यप पानी पर थमा हुआ है। यह कश्यप तीन सौ सत्ताईस योजन का है। एक योजन सौ कोस का कहा गया है। पानी में बड़ी जबर्दस्त ताकत होती है। इसी ने सारी सृष्टि संभाल रखी है। हमारे यहां महाप्रलय कभी नहीं हुआ। खण्डप्रलय तो कई बार हुए। शेषनाग और कश्यप कभी मृत्यु को प्राप्त नहीं हुए। ये दोनों मृत्युंजय हैं।

सर्प देवताओं में मुख्य रूप से देवनारायणजी, धर्मराजजी, कल्लाजी, पाबूजी, गोगाजी, तेजाजी मुख्य हैं।

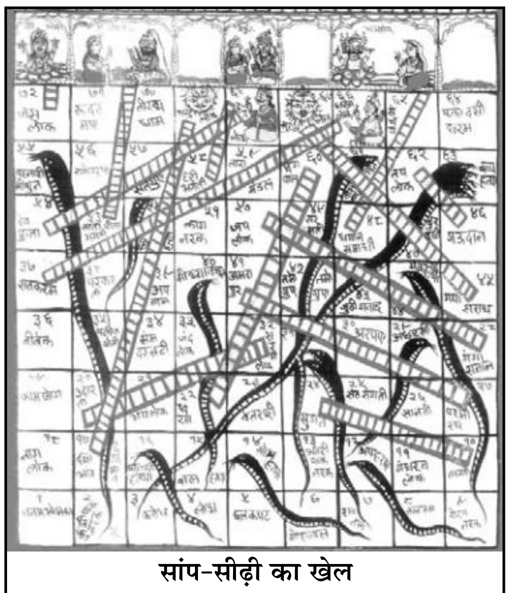

सांप-सीढ़ी का खेल

कल्लाजी का जन्मनाम केसरसिंह था। संतान नहीं होने पर इनकी माता श्वेतकुंवर अन्तरवासे का पुतला बना शिव-पार्वती की आराधना में लीन हो गई फलस्वरूप शिव-पार्वती ने उस पुतले में प्राण-प्रतिष्ठा की। अन्तरवासा केसरिया होने पर कल्लाजी का केसरसिंह नाम रखा गया। मृत्यु के बाद इन्हें लोकदेवता के रूप में नाग योनि प्राप्त हुई। देवी ने इन्हें पांच फण, दो आंखें, दो नाक तथा एक मुंह दिया। तीनों लोकों में इनका वास और जहां जो स्वरूप चाहें, धारण करने की कला दी।

कल्लाजी से बड़े देव के रूप में पार्श्वनाथ हैं जो नौ फण लिये हैं। ये जैनियों में 23वें तीर्थंकर के रूप में मान्य हैं। किसी भी तरह का सरदर्द होने पर इनकी माला फेरने से वह दर्द सदैव के लिए जाता रहता है।

नागमणि सर्प अपने सिर पर मणि लिये होता है। इसके प्रकाश में सांप अपने शिकार ढूंढ़ता है। सांप के मुंह में जहर भरी पोटली मोहरा होती है। कालबेलिये इसे निकाल लेते हैं। यह बड़ा कीमती होता है। सांप काटे स्थान पर इसे रखने से यह सारा जहर खींच लेता है।

पाबूजी की सर्वाधिक मान्यता ऊंटपाल राईका जाति में है जिन्हें रेबारी भी कहते हैं। ऊंटों की हर तरह की बीमारी पाबूजी महाराज हरते हैं। राईका अपने गले में पाबूजी की चांदी पर खुदी प्रतिमा, नावां तथा गोळ के रूप में उनके नाम की ताम्र-मुद्रिका धारण करते हैं। पाबूजी के भोपे-भोपिन मिलकर फड़ के रूप में कपड़े पर चित्रित चित्रावली को फैलाकर पाबूजी की यशगाथा का विशिष्ट भावाभिनय में वाचन करते हैं। पाबूजी लक्ष्मण के अवतार कहे गये हैं।

तेजाजी की मान्यता जाटों के कुलदेवता के रूप में है। वचन और वादे के निर्वाह के रूप में इनकी बड़ी ख्याति है। तेजा स्थानों पर बांबी से साक्षात् सर्प के रूप में तेजाजी दर्शन देते हैं। जहरीले स्थान पर भालू-बांस के जरिये तेजा-भोपा जहर खींचता है।

देवनारायणजी की प्रसिद्धि राजस्थान से बाहर मध्यप्रदेश, हरियाणा तक है। चौईस बगड़ावतों में सवाई भोज के निधन के 12 वर्ष बाद विधवा साढू को आये स्वप्न के अनुसार इनका जन्म मालेसर की डूंगरी पर विलक्षण बालक के रूप में हुआ।

गोगाजी की धाम राजस्थान के बाहर पंजाब, हरियाणा, हिमाचल, गुजरात, बंगाल, बिहार, उत्तरप्रदेश तक फैली हुई है। गायों की रक्षा के कारण ये देवत्व को प्राप्त हुए। सांपों पर असाधारण अधिकार होने के कारण गर्भवास में ही इन्होंने सांपों पर विजय प्राप्त कर ली थी। पालने में इन्हें सर्पों से खेलते देखा गया था।

धरती पर जब पाप असहय हो जाता है तब उसके शमन के लिए यज्ञ करने की परंपरा रही है। ऐसा ही यज्ञ 1985 की नवरात्रि का, मैं कभी नहीं भूल सकूंगा। यों प्रतिवर्ष ही नवरात्रि के अवसर पर काली कल्ला धाम वलाद (अहमदाबाद) की गादी पर मेरा जाना होता रहा। इस नवरात्रि पर कल्लाजी ने एक विशेष यज्ञ किया जो पांच हजार वर्ष पूर्व किया गया था तब नागों के बढ़ते प्रकोप से मुक्ति पाई गई थी।

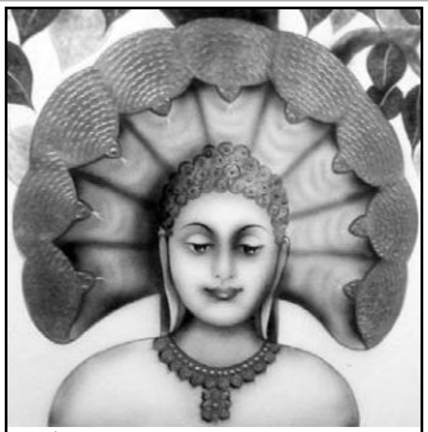

नौ फणी 23वें तीर्थंकर पार्श्वनाथजी

अहमदाबाद में हुए भयंकर दंगों की पुनरावृत्ति न हो इसलिए यह यज्ञ किया गया। यज्ञ के दौरान क्षण भर के लिए भयंकर तेज लपटें हुईं और आकाश बादलों से आच्छादित हो गया। वेदी से उठी भयानक लपटों में एक भीमकाय सर्प दृष्टिगत होते ही ओझल हो गया।

रात्रि में हमारी ज्ञान गादी लगी जिसमें मालिक ने बताया कि यज्ञ में अनिष्ट होने की आशंका थी पर सबकुछ शांतिपूर्वक हो गया। वासुकि का स्वयं पधारना हुआ तब धरती कंपायमान हुई। उन्होंने यज्ञ की सुगंध ली और पुन: धरती फाड़ अलोप हो गये। देवता की शक्ति का यह खेल सर्वथा निराला है। सारा करिश्मा मनुष्य के ज्ञान और बुद्धि से परे है।

ऐसा यज्ञ जनमेजय ने करवाया था।

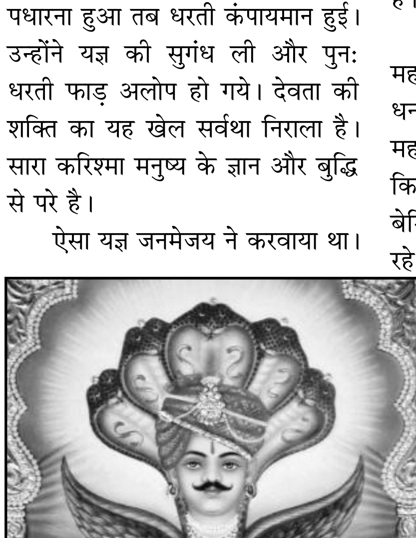

पंच फणी लोकदेवता कल्लाजी राठौड़

इसमें जगत के सारे नाग भस्म कर दिये गए थे। एक वासुकि बच निकला जो जमीं फाड़ ठेठ नीचे चला गया था। उसी वासुकि का परिवार बढ़ता-बढ़ता नौ कुली नाग और फिर चौरासी खांपों में विकसित हुआ। भीलों के गवरी खेल में राजा वासुकि की गावणी में पूरी कथा आती है जिसका निवास सातवें पाताल में बताया गया है।

जनमेजय के उस यज्ञ में सवा फीट गहरी वेदी में इतने नागों का दाह हुआ कि ढाई फीट ऊंची भस्मी का ढेर हो गया। उसमें तक्षक ने परीक्षित को डस लिया था जिससे उसकी अकाल मौत हो गई। जनमेजय ने समस्त नागों का दाह कर बदला लिया। जिस स्थान पर नाग दाह किया गया वहां आगे जाकर जो गांव बसा उसे नागदा कहा जाने लगा। आज मध्यप्रदेश में नागदा रेलवे जंकशन है।

श्रावण शुक्ला पंचमी का दिन नागपंचमी के दिवस के रूप में पूरे देश में माया जाता है। इस दिन राजस्थान में महिलाएं कहीं पांच, कहीं सात तथा कहीं नौ सांप बनाकर पूजती हैं। ये सांप कहीं हल्दी-चंदन के घोल से, कहीं गोबर से, कहीं ऐपन से तथा कहीं काळो से (कोयले में दूध मिलाकर) तो कहीं घी से उकेरे जाते हैं। इस दिन सर्प की बांबी की पूजा की जाती है। कहीं-कहीं असली सर्प भी पूजे जाते हैं। कालबेलिये भी सर्प को लिये घरों-घरों में जाते हैं तब महिलाएं सर्प के लिए दूध तथा कालबेलिये को धानचून, कपड़ालत्ता तथा पैसाटका देती हैं।

चित्तौड़ के किले के जितने भी महल-खंडहर हैं वे सबके सब अपार धनराशि के खजानों से अटे पड़े हैं। पूरे महली परिक्षेत्र में इतने खजाने मिलेंगे कि विश्व में अन्यत्र शायद ही ऐसे बेमिसाल खजाने हों। उस समय प्रसिद्ध रहे मोती बाजार में हीरे जवाहरात की दुकानें दूर-दूर तक जानी जाती थीं। सारे दुकानदार भामाशाह से ही जवाहरात खरीदकर बेचते थे। दुकानों के नीचे पांच-पांच, सात-सात मंजिल तलघर थे। वहां आज भी अदृश्य रूप में उन खजानों की नागों द्वारा रक्षा की जा रही है।

नाग-सांप के संबंध में कई मिथक, धारणाएं और कथा-किस्से प्रचलित हैं। पूरवज के रूप में नाग-योनि के कारण उनके 'घोड़ले' के शरीर में आकर पारिवारिक समस्याओं का निदान करते हैं। इनके नाम का रातिजगा भी दिया जाता है। गले में भी उनकी मूरत पहनी जाती है। सर्प योनि में होने पर मूरत पर सांप के आकार की घड़ाई कराई जाती है। पानी के सांप घातक और जहरीले नहीं होते। उन्हें इधर ढींढ़ू कहते हैं। एक दो मुंह वाली संपणी भी होती है जिसके दोनों ओर मुंह होते हैं। इसे दम्बोई कहते हैं। यह दोनों ओर से चलने की सामर्थ्य रखती है तथा विषहीन होती है। जिसके पीठ पर संपणी का निशान होता है उस महिला के बालबच्चे जीवित नहीं रहते हैं।

सांप-सीढ़ी के खेल में जहां दिमागी कसरत होती है वहां मनोरंजन के साथ शिक्षा भी भरपूर मिलती है। जैसा कर्म वैसा फल का सिद्धांत सभी मानते हैं। इस खेल में भी कई लोकों की मान्यता के साथ नागलोक की भी अवस्थिति है। सीढ़ी उत्कर्ष की तथा नाग अपकर्ष के प्रतीक हैं। इस खेल में जो नाग दिखाये जाते हैं वे एक फणी, दो फणी, तीन फणी तथा पांच फणी नाग होते हैं।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि भारतीय जनजीवन में नाग की मान्यता बड़ी गहरी है। कई ग्रंथों में नाग को लेकर बड़ी विचित्र मान्यताएं हैं। नाग के संबंध में तब भी रहस्य और विस्मय बना रहेगा।

जेईई मेन में शब्दांक भानावत संभाग में प्रथम

उदयपुर। केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की ओर से आयोजित जेईई मेन प्रवेश परीक्षा में शब्द रंजन की संपादिका रंजना-डॉ. तुक्तक भानावत के सुपुत्र शब्दांक भानावत ने संभाग में प्रथम स्थान प्राप्त किया। शब्दांक ने 254 अंक प्राप्त करते हुए 1367 ऑल इंडिया रेंक प्राप्त की। दूसरे स्थान पर जिशान शेख रहे जिन्होंने 252 अंक प्राप्त कर 1443वीं रेंक हासिल की। तीसरे स्थान पर निमिष नाहर को 250 अंकों के साथ 1533वीं रेंक मिली। शब्दांक एमडीएस का नियमित विद्यार्थी हैं जिसने रेजोनेंस के उदयपुर सेंटर से आईआईटी-जेईई की तैयारी की है। उसने बताया कि एमडीएस के निदेशक डॉ. शैलेन्द्र सोमानी सर का मार्गदर्शन मूल्यवान रहा।

शब्द रंजन कार्यालय के बाहर अपने गुप्त दस्तावेजों को पढ़ने में लीन

स्मृतियों के शिखर (51) : डॉ. महेन्द्र भानावत

अनुभवी उदाहरणों से लकदक चूण्डावतजी

किसी की किसी में रुचि होना ही महत्वपूर्ण नहीं है। महत्वपूर्ण यह भी है कि व्यक्ति किन-किन विभिन्न रुचियों से परिपूर्ण होकर अन्यों की जिज्ञासाओं का हल देता है। अन्यों को मार्गदर्शित कर कुछ करने के लिए रुचि सम्पन्न बनाता है। खोजक दृष्टि देता है। नये अछूते विषयों के प्रति जागरूक करता है और उन राहों को अन्वेषित करता है जिनकी खिड़कियां और रोशनदान खुले ही नहीं हैं। स्वरूपसिंहजी ने निरन्तर अपनी मनीषा को इन्हीं खोज की पगडंडियों पर मौज की रफ्तार दिये रखा। हमारे इतिहासकार जो पट्टे, परवाने, शिलालेख, रुक्कों, ताम्रपत्रों में ही प्रामाणिकता की खोज करते हैं वे यह भूल जाते हैं कि बहुत सारी बातें जो लोककंठों से सुनने को मिलती हैं, उनमें भी ठोस सच्चाई के बीज विद्यमान हैं।

श्री स्वरूपसिंह चूंडावत कई गुणों के धारक थे। वे एक सधे हुए सलाहकार थे। सामान्य से लेकर विशिष्ट व्यक्तित्व के धनी लोग उनके सम्पर्क में आकर धन्य हो जाते थे। वे हर क्षेत्र के, हर वर्ग के, हर तपके के लोगों से आत्मीय एवं हमदर्दी से मिलते। बहुत ही गंभीरतापूर्वक उनकी बात सुनते और उनके द्वारा चाही गई पुख्ता जानकारी से अवगत कराते। अनुभवों और उदाहरणों के वे भरपूर खजाने थे।

उनकी याददाश्त बड़ी प्रामाणिक, तगड़ी, पुख्ता और अकाट्य थी। इतिहास के पन्ने गलत जानकारी देने वाले हो सकते हैं मगर चूंडावतजी का कथन कभी गलत नहीं होता था। बहुत सी वह जानकारी भी उन्हें थी जिसका कोई ऐतिहासिक मूल्य, संदर्भ और प्रसंग नहीं था किन्तु मेरे जैसे व्यक्ति के लिए वे ही बातें अत्यंत उपयोगी और महत्वपूर्ण थीं। इस दृष्टि से वे जीवंत, जागरूक तथा ज्वलंत इतिहास थे।

किसी की किसी में रुचि होना ही महत्वपूर्ण नहीं है। महत्वपूर्ण यह भी है कि व्यक्ति किन-किन विभिन्न रुचियों से परिपूर्ण होकर अन्यों की जिज्ञासाओं का हल देता है। अन्यों को मार्गदर्शित कर कुछ करने के लिए रुचि सम्पन्न बनाता है। खोजक दृष्टि देता है। नये अछूते विषयों के प्रति जागरूक करता है और उन राहों को अन्वेषित करता है जिनकी खिड़कियां और रोशनदान खुले ही नहीं हैं।

स्वरूपसिंहजी ने निरन्तर अपनी मनीषा को इन्हीं खोज की पगडंडियों पर मौज की रफ्तार दिये रखा। बीते समय की, इतिहास की, साल-संवत् की, घटना-प्रघटना की, राजकाज की, उथल-पुथल की, युद्ध-उन्माद की कोई भी जानकारी उनके मुख से इस तरह सुनने को मिलती जैसे कम्प्यूटर ही खुल गया है। इतिहास का पृष्ठ साक्षात् हो गया है। एक-एक घटना को वे नीर-क्षीर-विवेक दृष्टि से इस सुथराई से समझाते कि पूछने के लिए कुछ बचता ही नहीं। एडवोकेट होने के कारण वे हर चीज को तार्किक दृष्टि से समझाते। उनके विभिन्न पक्षों से अवगत कराते और साथ-साथ अपना चिंतन और अपनी स्थापना को भी प्रामाणिक ढंग से प्रस्तुत करते।

सभा, सोसायटी में, सेमीनार में, संगोष्ठी-समारोह में जहां भी जाते, वे अपने विचार अवश्य रखते। पूरी जीवंतता और तैयारी के साथ विषय का प्रतिपादन करते और श्रोताओं को पूर्णत: संतुष्ट करते लगते। विभिन्न पक्षों के माध्यम से किसी विषय की पूर्ण जानकारी देने के लिए वे पूरा समझ लेते और यह चिंता नहीं करते कि उन्हें जो समय दिया गया है, वह समाप्त हो गया है। बार-बार संकेत करने पर भी वे पूरी ईमानदारी से अपना पक्ष रखते हुए जब तक स्वयं संतुष्ट नहीं हो जाते, तब तक अपना स्थान ग्रहण नहीं करते।

सुप्रसिद्ध डिंगल कवि नाथूसिंह महियारिया की जयंती को कुछ वर्षों तक बड़ी धूमधाम से मनाने के पीछे चूंडावतजी की प्रेरणा ही प्रबल रूप में रही। उन्हीं का यह सुझाव था कि इस दिवस को डिंगल दिवस के रूप में सर्वत्र मनाया जाय। यह प्रयत्न उदयपुर के रचनाधार्मियों का रहा भी लेकिन इसमें स्थायीत्व नहीं लाया जा सका।

चूंडावत साहब अच्छे वक्ता थे। अपने पक्ष को अनेक तथ्यों एवं प्रमाणों से पुष्ट कर प्रस्तुत करने में उनका कोई सानी नहीं था। किसी विषय की गुंडी खोलने के लिए उसका सांगोपांग विश्लेषण करने के साथ-साथ अंत में उसका निष्कर्ष प्रस्तुत कर वे श्रोता-विद्वानों को पूर्णत: संतुष्ट कर चिंतन के लिए प्रेरित किये रहते। इतना सबकुछ होते हुए भी वे मन से बड़े सहृदय, सहज और सीधापन लिये थे। अपने ज्ञान का, कुछ होने का उनमें जरा भी अहम् भाव नहीं था। कोई भी, कभी भी बड़े ही सहजभाव से उन तक पहुंच सकता था। वे हर समय आये-गये से मिलने के लिए तैयार रहते। उनके पास न पहले से समय लेकर जाने की जरूरत थी न कल पर टालने की ही उनकी मनोवृत्ति थी।

उनकी अचूक याददाश्ती को लेकर एकबार मैंने उनसे इसका रहस्य जानना चाहा तो उन्होंने बताया कि बचपन में एकबार वे बहुत बीमार हो गये। घरवालों ने उनके जीने की उम्मीद छोड़ दी। वे पास के किसी होशियार चिकित्सक से परामर्श के लिए ले जाये जा रहे थे कि रास्ते में एक वैद्यराजजी मिल गये। उन्होंने घरवालों से बालक के हालचाल सुने और आश बंधाई कि वे चिंता न करें, भगवान ने चाहा तो यह शीघ्र ही स्वस्थ हो जायेगा। घरवालों की उम्मीद बंधी और वे वैद्यराजजी के साथ आगे गांव पहुंचे। वैद्यराजजी ने कुछ ऐसी दवा दी जो जल्दी-जल्दी असर करती गई और वे देखते-देखते चंगे होने लगे। इन दवाइयों में मुख्य दवा, जिस पर चूंडावतजी ने अधिक जोर देकर कहा कि वह स्वर्ण मृगांक भस्म थी। इसके लिए वैद्यजी ने कहा कि बालक सदैव रोगमुक्त रहेगा साथ ही उसकी याददाश्ती बड़ी जबर्दस्त रहेगी। ऐसी जबर्दस्त कि उसमें जरा भी चूक याकि खोट नहीं रह पायेगी। कहना नहीं होगा, वैद्यजी का यह कथन अंत तक सौलह टका सत्य साबित हुआ।

उदयपुर से प्रकाशित जय राजस्थान में लगभग 25 वर्ष तक मैंने 'चलते-चलते' नाम से साप्ताहिक स्तंभ लेखन किया। इसके लिए चूंडावतजी न केवल मुझे प्रोत्साहित करते अपितु नई-नई अज्ञात सामग्री भी सुलभ कराते। एकबार उन्होंने बड़ीसादड़ी ठिकाने से संबंधित बड़ी मजेदार घटना सुनाई जिसका प्रकाशन 20 फरवरी 1994 को 'चलते-चलते' में किया गया।

जय राजस्थान में मैंने 5 फरवरी 1989 के अंक में चंडावतजी : जीवंत इतिहास शीर्षक से लिखा- 'चूंडावतजी हिंदी, राजस्थानी के साथ-साथ अंग्रेजी, संस्कृत एवं उर्दू के विद्वान थे। डिंगल भाषा का उनका ज्ञान बड़ा गहन ओर विस्तार लिये था। वे स्वयं भी डिंगल में अच्छी काव्य-रचना करते थे। खासतौर से दोहा-लेखन में उनका असाधारण पांडित्य था। उन्होंने बताया कि उनके पुरखे भी जानेमाने विद्वान, गुणज्ञ और गुणरसिक थे। पितामह ज्ञानसिंहजी को जयपुर के महाराणा सवाई प्रतापसिंहजी ने देवगढ़ से अपने यहां बुलाकर जागीर और सम्मान दिया। उदयपुर के महाराणा भीमसिंहजी नहीं चाहते थे ज्ञानसिंहजी जैसा विद्वान कवि अन्यत्र जाकर नाम कमाये अत: उन्होंने जयपुर से उन्हें अपने यहां बुलाकर बड़ा आदर सम्मान और आवभगत दी साथ ही सरस्वतीपुरा की जागीर प्रदान की।

मेवाड़ भूमि, इसके इतिहास और इसकी शूरवीरता पर चूंडावतजी को बड़ा गर्व था और वे अक्सर कहा करते थे कि इस भूमि का कण-कण ही इतिहास से ओतप्रोत है परन्तु दुख इस बात का है कि यहां के लोगों को भी इसकी पूरी जानकारी नहीं है। जो कुछ जानकारी है वह भी थोपी हुई अधिक है। अब जबकि सारे विश्व के पर्यटकों का इधर आना हो रहा है, हमें चाहिये कि हम उन्हें सही जानकारी दें पर उससे पहले हम तो शुद्ध हो लें।'

मेरे हर लेखन को वे संजीदगी से पढ़ते थे और कभी-कभी स्वयं मिलकर या सभा-संगोष्ठी में मिल जाते तो घर आकर मिलने की बात कह कर उसका विश्लेषण करते। प्रताप और मीरां संबंधी मेरी स्थापनाओं पर उन्होंने एक बैठक में यह कहने में कोई संकोच नहीं किया कि हमारे इतिहासकार जो पट्टे, परवाने, शिलालेख, रुक्कों, ताम्रपत्रों में ही प्रामाणिकता की खोज करते हैं वे यह भूल जाते हैं कि बहुत सारी बातें जो लोककंठों से सुनने को मिलती हैं, उनमें भी ठोस सच्चाई के बीज विद्यमान हैं।

महाराणा प्रताप से संबंधित मेरी हल्दीघाटी विषयक मान्यता को उन्होंने बड़ी गंभीरता से सुना जिसमें मैंने लिखा था- 'इस युद्ध में प्रताप की ओर से डेढ़ सौ महिला सैनिकों ने पुरुष-वेश में दुश्मनों का डटकर मुकाबला किया। इनमें से अधिकांश नव परिणिताएं थीं। उनके हल्दी-पीठी मय शरीरोत्सर्ग के कारण ही इस घाटी का नाम हल्दीघाटी पड़ा।'

इस पर चूंडावतजी ने कहा कि यह सर्वथा नया सोच है और इतिहासकारों को एक बड़ी चुनौती है। वैसे भी मेवाड़ में एक हल्दीघाटी नहीं, 121 हल्दीघाटियां हैं। किसी ने खोटा लिख दिया कि हल्दी जैसी पीली मिट्टी के कारण हल्दीघाटी नाम पड़ा।

यही नहीं, उन्होंने प्रताप संबंधी मेरी प्रतिज्ञा को भी अधिक सटीक, समयोचित और समझवाली बताया और कहा कि सोने-चांदी के बर्तन में नहीं खाकर पत्तल-दोनों में भोजन करने की बात साधारण ही लगती है। राजमहल छोड़ जंगल में भटकने वाले को पत्तल-दोने ही नसीब होंगे, इसमें बड़ी और खूबी वाली बात क्या है। मैंने लिखा था उनकी प्रतिज्ञा थी- 'जब तक मुगल सेना पर विजय नहीं पा लूंगा, तब तक अपने सिर से पगड़ी नहीं उतारूंगा। पांवों से जूतियां नहीं खोलूंगा और घोड़े से अलग नहीं रहूंगा। इस प्रतिज्ञा से सैनिकों में बड़ा जोश उमड़ा तब मीणों ने भी अपनी भुजाओं की ताकत दर्शाते हुए पंचकेशी रखने और घर नहीं बांधने का प्रण लिया।'

- शेष पृष्ठ सात पर

तीन तुकियां

अंधे की आंख में धूल :

स्कूल निरीक्षण समिति के एक सदस्य अक्सर मेरी नर्सरी की कक्षा में आते और बच्चों की पाठ्य-पुस्तक पर अंगुली रखकर पूछते- यह क्या है? ज जग का। वह बच्चों को डांटकर कहते- यह 'ज' का है या 'प' पतंग का।

निरीक्षण के बाद वे लाल-पीले होकर मुझसे कहते- क्यों मैडम! आप इन्हें क्या सिखा रही हैं? इन्हें तो कुछ भी नहीं आता। मुझे उदास देखकर सरल भाव से बच्चों ने एक प्रश्न किया, मैडम हम तो इन्हें सही बताते हैं, पर ये ही तुरन्त अपनी अंगुली दूसरे अक्षर पर रख देते हैं। ऐसा क्यों करते हैं? मैं मन ही मन बुदबुदाई- अंधे की आंख में धूल झोंकने के लिए।

दृष्टिवान ब्लाइंड :

अंध विद्यालय के प्रधानाचार्य ने दृष्टिहीन कक्षा में आकर प्रश्न किया- 'बच्चों! तुम्हारे संगीत के ब्लाइंड सर कैसे लगे?' केवल प्रधानाचार्य ही नहीं, विद्यालय में हर कोई हमारे सर के लिए जब कोई पूछना या कहना होता, उनके लिए 'ब्लाइंड सर' का सम्बोधन प्रयुक्त करता। मैंने कई तर्क दिये, 'क्या जो ब्लाइंड होते हैं, उनका नाम नहीं होता? क्या आपको 'दृष्टिवान' सर कहना उपयुक्त लगेगा?' वह निरूत्तर हो गए और फिर सदैव के लिए हमारे सर को, सम्बोधन मिल गया- 'राजीव सर'।

सूरदास बड़ा बाबा :

सड़क पार करने की चाह से खड़े एक वृद्ध व्यक्ति का उसने हाथ पकड़ा, कहा- 'चलो सूरदास बाबा! मैं आपको सड़क पार करवा देता हूं।' वृद्ध ने हाथ छिटकते हुए कहा- 'यह उस श्रेष्ठ महाकवि का अपमान है, जो हम जैसे साधारण व्यक्ति को सूरदास कहते हैं।'

-कोमल वाधवानी 'प्रेरणा', उज्जैन

तारा संस्थान के आनन्द वृद्धाश्रम का उद्घाटन

तारा संस्थान द्वारा हिरण मगरी, सेक्टर 14 में वृद्धजनों के आवास हेतु एक वृहद वृद्धाश्रम का निर्माण किया गया जिसमें 150 वृद्धजनों को सर्व-सुविधायुक्त नि:शुल्क

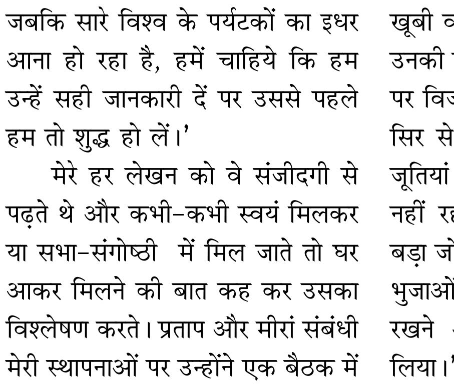

आवास उपलब्ध रहेंगे। यह वृद्धाश्रम राजस्थान का पहला वृद्धाश्रम होगा जिसमें सभी प्रकार की सुविधायें वृद्धजनों को उपलब्ध रहेंगी। आनंद आश्रम का उद्घाटन नारायण सेवा संस्थान के संस्थापक डॉ. कैलाश मानव एवं उनकी सहधर्मिणी कमलादेवी अग्रवाल के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ। मुख्य अतिथि के रूप में एन.पी. भार्गव, सत्यभूषण जैन, आर.के जैन, कुसुम गुप्ता, लता भाटिया, रेणु छाबड़िया, मोहनसिंह भाटिया, महेन्द्र कुमार, रेवतमल सुराणा तथा संस्थान के प्रशांत अग्रवाल उपस्थित थे। तारा संस्थान की संस्थापक कल्पना गोयल ने बताया कि बुजुर्गों को वृद्धाश्रम में चिकित्सा, भोजन, वस्त्र, पुस्तकालय एवं मनोरंजन के सभी साधन उपलब्ध रहेंगे। उल्लेखनीय है कि तारा संस्थान द्वारा इलाहाबाद एवं फरीदाबाद में भी इसी प्रकार के वृद्धाश्रम तथा उदयपुर, मुम्बई, दिल्ली एवं फरीदाबाद में आई हॉस्पीटल चलाये जा रहे हैं।

अतीजे के विवाह में मुम्बई की मौज

लगे हाथ एलिफेंटा, पगोड़ा, मत्स्यालय तथा फिनिक्स मॉल का भी मजा लिया

जाने आने के दो दिन छोड़ भी दें तो भी मुम्बई में हमारा प्रवास चार दिन तो अखण्ड रहा ही। अतीजे भव्येश की शादी में हम कुल सात जने थे- मैं, बहू रंजना, पोता अर्थांक, बिटिया डॉ. कविता, डॉ. कहानी, जंवाई जितेन्द्रजी तथा दोहित्री युक्ता। 18-19 अप्रेल शादी की सभी रस्मों-रिवाजों में व्यस्त रहे। बाद के दो दिन मुम्बई दर्शन किये।

भतीजे राजीव तथा बहूरानी रेखा ने सभी सुविधाएं और सारसंभाल की ठाठदार व्यवस्था की। ब्याईजी जयेन्द्र मेहता और ब्याणजी सोनल बड़े ही मिलनसार, हमझोली और अपनत्व लिए खुशमिजाज लगे। मेहता होने के कारण हम घनिष्ट इसलिए भी हो गये कि मेरी दोनों पुत्रियों तथा भाई साहब की पुत्री तृप्ति का विवाह मेहता परिवार में हो चुका था। ये मेहता मेवाड़ के हैं जबकि जयेन्द्रजी गुजरात से हैं। उनके बड़ेरे कभी मुम्बई आकर बस गये थे। जयेन्द्रजी की पुत्री हेतल हमारे घर की बहू बनी। मैंने अंदाज लगाया और कहा कि गुजरात का नरसी मेहता के कारण बड़ा नाम है। हो सकता है, उन्हीं के वंशज मेहता नामधारी हों।

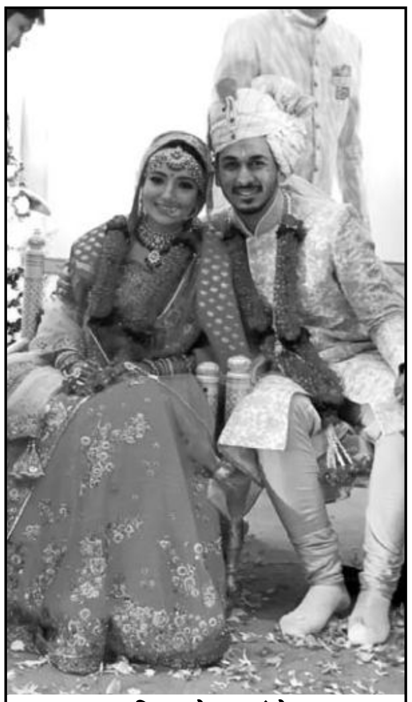

नव दम्पति भव्येश एवं हेतल

उल्लेखनीय तथ्य तो यह है कि नरसी राजस्थान में डूंगरपुर के नागर ब्राह्मण थे। उनका कद छोटा था पर सिद्धि के दातार थे। जूनागढ़ में उनके वहां मांगने वालों की भीड़ हर समय बनी रहती थी। आसपास के प्रत्येक गांव के लोग एक मण अनाज में से एक सेर के हिसाब से दान के लिए निकालकर नरसी के यहां भिजवाते थे। ऐसा बोरीबन्द अनाज नरसी के यहां इकट्ठा होता रहता। इसी प्रकार लोग गायों के लिए घास भेजते रहते।

साधु-सन्तों का तांता नरसी के यहां लगा ही रहता। सभी मुफ्त भोजन पाते। भोजन के बाद मांगने वालों की लम्बी लाइन लगती। नरसी तब गादी पर बैठ जाते और उसके नीचे से निकाल-निकाल कर प्रत्येक को दान स्वरूप जो राशि हाथ लगती, देते रहते। यह राशि एक-दो रूपया से लेकर सौ-सौ रूपया तक होती। गादी से उठने के बाद जब वे पलंग पर जाते तब उनके पास कुछ नहीं रहता। गायें भी उनके यहां खूब पलतीं। दो सौ से अधिक साधु तो गायों की देखभाल में रहते।

जितेन्द्र, डॉ. कहानी, रंजना, डॉ. कविता, युक्ता, डॉ. महेन्द्र तथा अर्थांक

अच्छा लगा कि गुजराती रीतिरिवाज के अनुसार विवाह की रस्में पूरी हुईं। इसके लिए रातभर जगेरा नहीं करना पड़ा। 18 को मेहंदी, माहेरा और रात को पहले सगाई दस्तूर फिर संगीत संध्या का आयोजन रखा गया। दिन को मेहंदी और संगीत का कार्यक्रम बड़ा ठाठदार रहा। मेहंदी मांडने वाले तीन युवाओं ने न केवल सभी महिलाओं बल्कि पुरुषों के हाथों में भी भांति-भांति के मनचाहे - मनभाहे अंकन उभार कर वातावरण को खुशनुमा कर दिया।

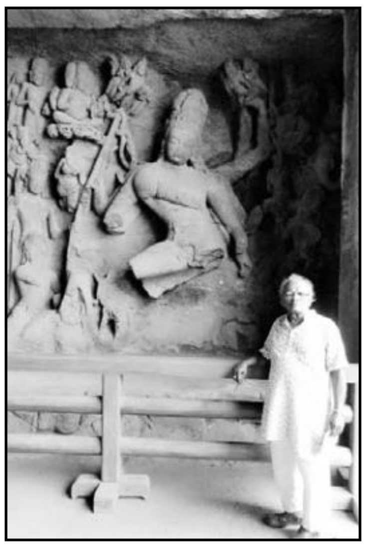

मेहंदी के साथ-साथ संगीत का मधुर सुहाना कार्यक्रम गायिका सुधा शर्मा के नेतृत्व में संध्या तक चलता रहा। विवाह-शादी हो या भजन संध्या, रातीजगा हो, अखंड ज्योत पाठ हो या सुंदरकांड का आयोजन सुधा अपने दल सहित पिछले कुछ वर्षों से देश के कई भागों में अपने उत्कृष्ट आयोजन के लिए पहचाना नाम है।

हमारे कार्यक्रम में सुधा लगातार बड़ी रसिकता से छाई रही। सर्वाधिक राजस्थानी गीतों को गाने और थिरकने पर मैंने पूछ ही लिया कि उसका कंठ-स्वर राजस्थानी वाणी के मिठास से मुझे अधिक तर लग रहा है। यह सुन वह अत्यंत उल्लसित हुई। मेरे अंदाज की अत्यधिक सराहना करते हुए उसने अपने को राजस्थान की बताया और सेल्फी भी ली।

सभी कार्यक्रम योजनाबद्ध और कई दिनों की तैयारी लिये खुशहाल शोभित थे। दोनों दिन हमारा निवास जुहू-तारा रोड़ स्थित होटल एम्ब्रल्ड बना। यहीं पास में जुहू बीच देखा जहां समुद्र की आती-जाती लहरों को देखकर मुझे स्वरूप व्यास याद आते रहे। वर्षों पूर्व जब वे उदयपुर से मुम्बई गये तो यहीं, इन्हीं लहरों को देख उन्हें काव्य-सृजन की प्रेरणा मिली और अपनी जादूगरी के प्रभाव से उन्होंने फिल्म्स डिवीजन में लगभग 5 हजार डोक्युमेंट्री फिल्मों में वाणी का दिव्य वातायनी वगार दिया।

रंजना की मुम्बई दर्शन की तमन्ना अधूरी रह जाती यदि वह अमिताभ बच्चन का जलसा तथा प्रतीक्षा, शाहरूख खान का मन्नत, मुकेश अम्बानी का एलटीना और हेमामालिनी -धर्मेन्द्र के बंगले नहीं देखती। इन बंगलों के बाहर खड़ी भीड़ को देखकर ही मैं आकुल-व्याकुल होता रहा और सोचता रहा कि हमारे देश में कैसे-कैसे दीवाने लोग हैं जो यह जानकर भी कि इन बंगलों से उन्हें कोई चेहरा देखने को नहीं मिलेगा फिर भी उनकी दीवानगी का पागलपन उनके सिर चढ़ा हुआ है। मुम्बई दर्शन हेतु 20 अप्रेल को एलिफेन्टा की यात्रा की। अरब सागर के किनारे गेट वे ऑफ इंडिया से फेरी (बोट) द्वारा गुफाओं तक पहुंचना होता है। सामने सड़क के दूसरे छोर पर आलीशान ताजमहल होटल है। दोनों बड़े ही आकर्षक और सुदर्शनीय होने के कारण हर समय ही भीड़ भरे बने रहते हैं।

रंजना भानावत एवं डॉ. कविता मेहता

लोग नहीं जानते कि एलिफेन्टा की गुफाएं बड़ी रहस्यमय हैं। मार्गदर्शिका में भी कहीं उल्लेख नहीं कि यहां रावण ने तपस्या की थी।

रावण बड़ा ज्ञानी, ध्यानी, क्रियाकांडी तथा अध्यात्मनिष्ठ शिवभक्त था। एकान्त तपस्या के लिए वह चाहता था कोई ऐसा स्थान मिले जहां आदमी तो क्या किसी पंखेरु तक की पहुंच न हो। इसके लिए उसने बहुतेरी खोज की-कराई और अन्त में यहां सफलता मिली। यह स्थान गेट वे से 9 किलोमीटर दूर टापू पर है जिसे एलिफेन्टा कहते हैं। यही कैलाश है। कैलाश का अर्थ ही है ऐसा गुफा-पहाड़ जिसके चहुंओर पानी का परकोटा हो। यहां रावण विमान से आया और अपने मूर्तिकार कलाकारों को लाकर शिव की एक-एक प्रतिमा निर्मित कराता गया और कमल-पूजा करता गया। यही पूजा 'कैलाश पूजा' कही जाती है जिसमें अनुष्ठानपरक पूजाधारी को अपना शीश चढ़ाना होता है।

रावण ने ऐसी एक-एक कर दस प्रतिमाएं बनवाईं और दस बार अपना सिर शिव-समर्पित किया। वह ज्योंही अपना सिर चढ़ाता कि पुन: वह सरजीवित हो उठता। यह सब ऐसी एकान्त साधना थी जिसकी किसी को हवा तक नहीं लगी। कोई-ऋषि-मुनि भी यह नहीं जान पाया।

यहां बहुत बड़ा यज्ञस्थल भी है। रावण ने इस तपस्या-आराधना में शिवधनुष चाहा जो मिला भी। नारद ने इसे लिया तब विष्णु ने कहा रोको। ब्राह्मण बन विष्णु ने उसे पकड़े रखा। रावण इस धनुष को लंका ले जाना चाहता था पर यह जनकपुरी की बगल तक ही पहुंच पाया।

कैलाश में विभिन्न शिव-प्रतिमाओं के जो स्वरूप हैं उन सबमें शिव के ही विभिन्न रूप-दर्शन हैं। नटराज शिव, योगीश्वर शिव, द्युत क्रीड़ारत शिव-पार्वती, अर्धनारीश्वर शिव, महेश मूर्ति शिव, गंगाधर शिव, अंधकासुर वध, मानीनी पार्वती, कैलाशोद्धारक शिव तथा कल्याणरंजक शिवनामी इन प्रतिमाओं का शिल्प सौंदर्य तथा अनूठा भावांकन विश्व की अद्भुत अनुपम एवं अलौकिक थाती है।

हमने एक-एक प्रतिमा को बड़ी बारीकी से देखा। उनके साथ बहू रंजना ने फोटो भी लिये। कहानी चित्रकला की व्याख्याता है और एलिफेन्टा के सम्बन्ध में पढ़ाती भी है। उसे जब साक्षात् देखने का अवसर मिला तो खुशी का ठिकाना नहीं रहा।

दूसरे दिन 21 अप्रेल के दर्शनीय स्थानों में समुद्र में अवस्थित मौन साधना स्थल पगोड़ा मुख्य रहा। समुद्र के बीच कोलाहल से सर्वथा दूर शांत विरल पावन स्थल पर निर्मित ऐसा स्थल एशिया में अन्यत्र कहीं देखने को नहीं मिलेगा। इसके बाद वहां का सबसे बड़ा फिनिक्स मॉल देखा जहां सर्वाधिक खाने-पीने और आनंद की मौज बच्चों ने लूटी। यह मॉल हाईफाई लोगों का बड़ा ही सुन्दरतर लगा। इसमें सारे ब्राण्डेड शोरूम देखते-देखते ही मैं बुरी तरह थकता रहा। बीच में हमने फिश एक्वेरियम देखा जहां सर्वाधिक आकर्षक कछुआ रहा जो अपेक्षाकृत अत्यन्त श्वेत तथा मोटा-ताजा निरन्तर पानी को पछांट देता अपने हाल में कमाल बना हुआ था।

मेरीन ड्राईव को देखने का मजा तो रात को ही है। यहां की हर क्षण हलचल देती सड़कें ही नहीं हैं, आकाश मार्ग से भी हर मिनिट हवाजांज की उड़न-अनुगूंज देखने को मिलती है। ठेठ गांवों, कस्बों और छोटे शहरों के लोगों को कुछ समय तो मुम्बई चमत्कृत कर सकता है मगर अधिक ठहराव तो बेचैनी देने वाला ही होता है इसीलिए हमारे आने-जाने को भी हमने हवाई मार्ग ही चुना ताकि सब मजे के साथ यह मजा भी ले सकें।

इसे क्या कहा जाय कि मुम्बई में रहने तक मुझे हर समय स्मृतिशेष अपनी मातुश्री, भाई-भाभीश्री, सहधर्मिणी, पुत्र मुक्तक की याद ही नहीं बनी रही, लगता भी रहा कि वे सभी इस महोत्सव में हमारे साथ हैं। मैं हर समय उनकी उपस्थिति को महसूस करते सारे संस्कारजनित आयोजनों तथा दर्शनीय स्थलों के समय अन्तरमन में भीगा-भीगा ही बना रहा। काश! वे सब हमारे साथ प्रत्यक्षदर्शी होते।

- डॉ. महेन्द्र भानावत

शब्द रंजन

उदयपुर, मंगलवार 01 मई 2018

सम्पादकीय

सृजन का सुख

यह प्रश्न उस हर जन के लिए है जो सृजनशील है कि उसका सृजन-सुख क्या है? क्यों और किसके लिए वह सृजन करता है? ऐसे कई लोग हैं जो स्वान्त: सुखी बनकर लिख रहे हैं। लिख-लिखकर धर रहे हैं। उन्हें छपास की भूख या पीड़ा नहीं है लेकिन उनसे अधिक वे लोग हैं जो लिख ही छपास के लिए रहे हैं। नहीं छपने पर उन्हें बेचैनी रहती है। आफरा आ जाता है। ऐसे भी हैं जो अपने लेखन पर पुरस्कार प्राप्ति की होड़ और जोड़ तोड़ में रहते हैं। पुरस्कार मिलने पर भी उनकी बेचैनी और आगे प्राप्ति के लिए ठंडी नहीं होती है। पुरस्कार प्राप्त करने पर भी वे श्रेष्ठ सर्जक के रूप में चर्चित नहीं होते मगर उन्हें मियां मिटू बनने का अपार सुख प्राप्त होता लगता है पर भीतरी झेंप के दर्द की बनावटी हंसी तो झलक-मलक देती ही है।

यह रेखांकित करने जैसा पक्ष है कि आज चारों ओर कुकुरमुत्ताओं की तरह छोटे-मोटे पुरस्कारों की बाढ़ दिखाई देती है। ऐसा लगता है कि पुरस्कार लेने वालों की लम्बी कतार लगी हुई है जैसे टिकिट खिड़की पर देखी जाती है। कई बार पुरस्कार देने वाला असल पुरस्कर्ता को ढूंढ़ते भी रहते हैं पर वह आसानी से हाथ नहीं लगता।

ऐसा सुनने में सभी को आता होगा कि कई संगठन सम्मान-पुरस्कार देने से नाम पर कोई राशि नहीं देते। एक तिलक निकालता है। दूसरा नारियल थमाता है। तीसरा गले में माला डालता है। चौथा कंधों पर दुपट्टा बोझिल करता है। यह हो गया सम्मान। कहीं इनके साथ शॉल, उपरना जुड़ता है। कहीं हवा में उड़ता जैसा सम्मान पत्र थमा दिया जाता है।

लोग कहते हैं इस सम्मान से देने वाले एक साथ मंच पर प्राप्तकर्ता से अधिक अपनी पहचान देते खुशमिजाज बने रहते हैं। भीतर में यह भी होता है कि सम्मान का जो लिफाफा सबके सामने पकड़ाया जाता है वह दिखावटी मात्र बनकर रह जाता है। इन सब चमकों का अन्त उस मोर की तरह होता है जो उल्लास और उम्मीद के साथ अपने सुनहरे पंख फैला कर नाचता है लेकिन अन्त में अपने पांवों को निहारकर उदास निराश और हताश होता है।

जो भी हो, ऐसे सृजनकार यद्यपि कम हैं पर जो हैं निरन्तर छपते रहते हैं इसलिए कि उनके पास लेखन की प्रामाणिकता है इसलिए उनकी गुडविल बनी हुई है। वे निरन्तर लिखते हैं इसलिए निरन्तर छपते हैं। उनके सृजन की मांग बराबर बनी रहती है इसलिए एक तो वे सृजक हुए जो डिमांड के अनुसार लेखन-कर्म करते हैं लेकिन उनसे भी ऊंचे वे सर्जक हैं जिनके लेखन के कारण डिमांड बनती है। वे डिमांड बनाते हैं, पैदा करते हैं और यह डिमांड उस उत्कर्ष को पकड़ती है कि पत्रों में उनके लेखन के अनुसार जगह निर्धारित करनी पड़ती है। उसके अनुसार वह विधा विशेष चर्चित हो जाती है जिसके कारण उस पत्र-विशेष का दबदबा भी बढ़ने लगता है।

पत्र-पिटारी

'शब्द रंजन' मुझे नियमित भेजा जा रहा है पर मिलता कभीकभाक है। उम्मीद है आपके भेजने के क्रम अनवरत जारी रहेगा, पर पोस्टमेन पहुंचायेगा या नहीं, उस पर विश्वास नहीं कर सकते, ना ही ये हिम्मत कि उसे टोका जा सके। ऐसी शिकायत मुझे ही नहीं, औरों को भी है।

एकबार किसी सम्पादक बन्धु ने पूछा- 'आपको हमारा साप्ताहिक समाचार पत्र मिलता है या नहीं?' मेरे यह बताने पर कि सालभर में कभी-कभी ही आपका अंक मिलता है। उन्होंने मुझे पोस्टमास्टर को शिकायत पत्र लिखने को कहा पर मुझे याद आया, दादा शिव चौरसियाजी ने एकबार मुझसे कहा था-'शिकायत बिल्कुल मत करना। जो थोड़ी-बहुत डाक मिलती है, उससे भी हम वंचित हो जायेंगे।' मुझे वैसे भी किसी की शिकायत करना पसंद नहीं पर उन्हीं लोगों ने मेरे नाम से शिकायत पत्र लिख भेजा। फिर आगे की कथा बहुत करूण है।

पोस्टमेन जो मुझे 'दीदी' कहकर आवाज देता था, वो खामोश हो गया और इससे पूर्व उसने मुझसे अपनी शिकायत वापस लेने की अर्जी भी लिखवा ली। उसकी आंखों में आंसू थे, क्योंकि वह रिटायर होने वाला था तथा उसकी रिपोर्ट में एक भी शिकायत दर्ज नहीं थी। इसलिए अब सिर्फ ईश्वर से ही प्रार्थना करनी होगी कि डाक से आने वाले साहित्य से वंचित न करे।

एक बात कहूं, अगर हम दूसरे पहलू पर गौर करें तो पोस्टमेन को हम निर्दोष पायेंगे। आजकल लोकल में भी डाक द्वारा ही पत्र-पत्रिकाएं भेजी जा रही हैं। पोस्टमेन पर जिम्मेदारी ज्यादा बढ़ती जा रही है। आखिर वह कितना बोझ लादेगा अपनी साइकिल पर। उन्हें भी हक है, वाहन की सुविधा का। मैं तो समझती हूं एक ओर सीमा पर जवान हैं तो दूसरी ओर ये लोग भी, जो घर-घर जाकर सामाजिक परिवेश को मजबूत करते हैं। **-कोमल वाधवानी 'प्रेरणा', उज्जैन**

आकाशवाणी का वह स्वर्णिम तथा स्मरणीय काल

आकाशवाणी कवि गोष्ठी का कार्यक्रम मैंने कानोड़ भी रखवाया। कवियों को लगा भी कि शहरों की बजाय गांवों में श्रोताओं के लिए आकाशवाणी के कार्यक्रम अधिक उपयोगी असरदार और उपलब्धिमूलक होते हैं। आकाशवाणी वालों ने हमें अपने प्रांत तक ही सीमित नहीं रखा बल्कि हमारे सृजन को अखिल भारतीय श्रोता समुदाय तक पहुंचाने का भगीरथ कार्य किया। पर वह समय अब लगता है, आकाशवाणी द्वारा ही स्वप्नवत कर दिया गया है। अब तो वर्षों से लग रहा है जैसे यहां आकाशवाणी का कोई केन्द्र ही नहीं है।

मेरे जैसे अनेक लोग हैं जिनके लेखन को प्रभावी और परोसकारी योग्य बनाने में आकाशवाणी केन्द्र की अति मुख्य भूमिका रही है। राजस्थान में सबसे पहले जयपुर में आकाशवाणी केन्द्र स्थापित हुआ तब मुझे निरन्तर जाने का अवसर मिला। वहां सबसे पहले तो मुझे राजस्थानी काव्यपाठ के लिए ही बुलाया गया तब हनुवन्तसिंह देवड़ा, सवाईसिंह धमोरा और गणपतलाल डांगी के परिचय और आत्मीय जुड़ाव ने मुझे अभिभूत कर दिया। तीनों ही अपने-अपने क्षेत्र के स्थापित अनुभवी विद्वान और दूर-दूर से लेकर नजदीक के लोगों में बड़े ही मनोहारी दबदबे वाले व्यक्तित्व थे जिनसे इस केन्द्र की दूर-दूर तक ओपमा बनी हुई थी। अनुशासनबद्ध सृजन करना और उससे अधिक चेतनवान होकर उसकी प्रस्तुति का गुर मैंने इन्हीं से सीखा। डांगीजी की नियमित प्रस्तुति 'एक दाण आवोजी जंवाईजी पामणा' और त्वरितगामी तुकबंदियों ने हर श्रोता को विमोहित कर जकड़पूर्वक बांधे रखा।

एकबार डांगीजी ने मुझे अपने निवास पर आमंत्रित किया। मैं अपने जंवाईराज डॉ. सतीश मेहता के साथ गया। परिचय पाकर वे अति प्रसन्न ही नहीं हुए, सतीशजी को अपना जंवाई मान देहरी पर ही उनका तिलक किया और ग्यारह रुपया बतौर नजराणा दिया। उसके बाद उन्होंने अपना पूरा संग्रहालय बना निवास दिखाया तो मैं चकित रह गया। वह अद्भुत नजारा अभी भी मेरी आंखों के सामने घूमता हुआ डोल रहा है। डॉ. इन्द्रप्रकाश श्रीमाली ने बताया कि 5 मार्च 1967 को उदयपुर में आकाशवाणी केन्द्र की स्थापना हुई। उसके बाद जयपुर कभीकभाक ही जाना हुआ लेकिन उदयपुर में साहित्य से लेकर अन्य सभी प्रकार की हलचल बढ़ गई। यहां एस.एस. मूर्ति, के. एस. मैत्रा, सेलवम, मुरलीमनोहर मंजुल, सत्येन्द्र बोस जैसे विविध क्षेत्रों के निष्णात डायरेक्टर आये। इनमें प्रसारण अधिकारियों से हमारा सम्पर्क अधिक बना। चांदशिवपुरी, सागरमल जैन स्मृतिशेष हैं पर इकराम राजस्थानी, महेन्द्र मोदी, सुखदेव शास्त्री, रामू शास्त्री, माणिक आर्य, डॉ. जयप्रकाश ज्योतिपुंज, इन्द्रप्रकाश श्रीमाली, विनोद अडाणिया, शिवाजी अभी भी अपनी चमक बनाये कला, साहित्य, संगीत तथा लेखन कार्य में दमक रहे हैं।

इनके साथ विगत वर्षों में अनेक बार कभी वार्ता प्रसारण, कभी काव्यपाठ, कभी समीक्षा संदर्भ, कभी साक्षात्कार कर्ता और कभी साक्षात्कार लेता के रूप में रू-ब-रू होने पर हमारी नजदीकियां बढ़ीं। काव्यगोष्ठियों में स्थानीय कवियों के अलावा अन्य ख्यातनाम कवियों के साथ हमरूप होने के अवसर मिले। दो-तीन बार तो आकाशवाणी कवि गोष्ठी का कार्यक्रम मैंने कानोड़ भी रखवाया। कवियों को लगा भी कि शहरों की बजाय गांवों में श्रोताओं के लिए आकाशवाणी के कार्यक्रम अधिक उपयोगी असरदार और उपलब्धिमूलक होते हैं।

इसे भी एक अन्य महत्वपूर्ण उपलब्धि ही कही जाएगी कि आकाशवाणी वालों ने हमें अपने प्रांत तक ही सीमित नहीं रखा बल्कि हमारे सृजन को अखिल भारतीय श्रोता समुदाय तक पहुंचाने का भगीरथ कार्य किया। मुख्य केन्द्र दिल्ली से प्रसारित 'साहित्य भारती' स्तंभ के अन्तर्गत हमारी वार्ताओं को देश के सभी केन्द्रों तक प्रसारित कराया। राजस्थान के लोकसाहित्य, उसकी संस्कृति और लोकानुरंजपरक ऐसी कुछ वार्ताएं मेरी भी प्रसारित हुईं।

मुझे स्मरण है, डॉ. इन्द्रप्रकाश श्रीमाली ने मेरी राजस्थान के लोकसाहित्य का वैशिष्ट्य विषयक वार्ता साहित्य भारती के लिए रेकार्डिंग कर भेजी थी जिसका प्रसारण ऑल इंडिया रेडियो के सभी केन्द्रों से 3 जून 2009 को हुआ। उसका एक फोटो भी उन्होंने मुझे सुलभ कराया।

पर वह समय अब लगता है, आकाशवाणी द्वारा ही स्वप्नवत कर दिया गया है। अब तो वर्षों से लग रहा है जैसे यहां आकाशवाणी का कोई केन्द्र ही नहीं है।

विवाह समारोह में रक्तदान शिविर एवं सम्मान समारोह

उदयपुर में विवाह समारोह के दौरान एक नये सामाजिक सरोकार रक्तदान शिविर एवं सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि गृहमंत्री गुलाबचन्द कटारिया ने कहा कि राजस्थान के इतिहास में संभवत: प्रथम बार कोई परिवार विवाह समारोह की अतिव्यस्तता, शहनाई, ढोल-नंगाड़े व मेहमानों की आवभगत के बीच समय निकाल कर सामाजिक सरोकार के रूप में रक्तदान शिविर व सम्मान समारोह का आयोजन कर एक नई मिसाल कायम कर रहा है। दूल्हे के चाचा वैद्य शोभालाल औदिच्य ने बताया कि विवाह पर रक्तदान शिविर में कुल 60 यूनिट रक्तदान किया गया। साथ 25 से अधिक बार रक्तदान करने वालों का विशेष सम्मान किया गया।

सांसद अर्जुनलाल मीणा, विशिष्ट अतिथि यूआईटी चेयरमेन रवीन्द्र श्रीमाली ने कहा कि इस तरह का आयोजन हुआ है कि यह आने वाले समय में शहर के हर समाज, संस्था व समाजसेवियो को प्रेरणा देता रहेगा। एमपीयूएटी के कुलपति उमाशंकर शर्मा तथा मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के कुलपति ने कार्यक्रम की प्रंशसा करते हुए भूरि-भूरि प्रशंसा की।

गोइन्का पुरस्कार समारोह सम्पन्न

कर्नाटक सरकार के अवकाश प्राप्त अतिरिक्त मुख्य सचिव चिरंजीव सिंह की अध्यक्षता में बैंगलोर के सुप्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. प्रभाशंकर प्रेमी को इक्कीस हजार रुपये राशि के 'पिताश्री गोपीराम गोइन्का हिन्दी-कन्नड़ अनुवाद पुरस्कार' से जितेन्द्रनाथ सान्याल की कृति 'अमर शहीद सरदार भगतसिंह' के कन्नड़ अनुवाद के लिए प्रदान किया गया। संग-संग इक्कीस हजार रुपये राशि का 'बालकृष्ण गोइन्का अनूदित साहित्य पुरस्कार' डॉ. एम. बालसुब्रह्मण्यन की मूलकृति 'भारतीय साहित्य के निर्माता कवि कण्णदासन' के हिन्दी में अनुवाद के लिए चेन्नई के डॉ. पी. के. बालसुब्रह्मण्यन को दिया गया। इक्कीस हजार रुपये राशि का 'सत्यनारायण गोइन्का अनूदित साहित्य पुरस्कार' तुलसीदास द्वारा रचित 'रामचरितमानस' के मलयालम में पद्यानुवाद के लिए तिरवनन्तपुरम के डॉ. सी. जी. राजगोपाल को दिया गया। इक्कीस हजार रुपये का 'बाबूलाल गोइन्का हिन्दी साहित्य पुरस्कार' कोच्ची के डॉ. के. वनजा को उनकी मूल हिन्दी कृति 'इको-फेमिनिज्म' के लिए दिया गया। उपरोक्त सभी साहित्यकारों को इक्कीस हजार रुपये नगद के संग प्रतीक-चिन्ह, शॉल, श्रीफल एवं पुष्पमाला प्रदान कर सम्मानित किया गया। पुरस्कार समारोह 8 अप्रेल को गांधी भवन बेंगलूरू में आयोजित हुआ। इस अवसर पर कमला गोइन्का फाउण्डेशन के प्रबंध न्यासी श्यामसुन्दर गोइन्का ने स्वागत भाषण एवं संस्था का परिचय दिया। संचालन डॉ. आदित्य शुक्ल ने तथा धन्यवाद श्रीमती सरोज व्यास ने ज्ञापित किया।

पोथीखाना

बाल पाठकों को विरासत से रु-ब-रु कराती 'गवरी'

80 साल के डॉक्टर महेंद्र भानावत की नई बाल पुस्तक 'गवरी' आदिवासी भीलों का अनुष्ठानिक नृत्य गवरी पर आधारित है। गवरी को बोलचाल की भाषा में राई के नाम से भी जाना जाता है। राजस्थान की कुल जनजातियों में 39 प्रतिशत भील हैं। ये मुख्यतः राजस्थान के दक्षिणी जिलों में रहते हैं।

बांसवाड़ा, उदयपुर, डूंगरपुर, और चित्तौड़गढ़ के आसपास का क्षेत्र इनका गढ़ है। डॉ. महेंद्र को चिंता सता रही हैं कि आज आधुनिकता की दौड़ में कहीं हमारी आने वाली पीढ़ी उस विरासत को न भूल जाएं जिस पर हमारा जीवन खड़ा हुआ है। इसे गंभीरता से लेते हुए बाल पाठकों को इस विरासत से परिचित करवाने के उद्देश्य से पुस्तक में गवरी नृत्य की पूरी जानकारी के साथ इसके प्रत्येक पहलू पर चर्चा की है। किताब बच्चों को ध्यान में रखकर लिखी गई है इसलिए भाषा सरल है।

• किताब बच्चों को ध्यान में रखकर लिखी गई है इसलिए भाषा सरल है।

डॉ. महेंद्र ने बताया है कि समय के साथ इसमें काफी बदलाव हुआ। कहानी और गीतों के साथ भी गवरी प्रचलित होने लगा। गांव का चौराहा हो या खुला आंगन सभी जगह गवरी का रंगमंच होता है। भाद्र महीने से शुरू होकर पूरे सवा महीने तक रोजाना सुबह 9 बजे से शाम 6 बजे तक यह खेला जाता। प्रत्येक भील परिवार का सदस्य इसमें हिस्सा लेना अपना धार्मिक कर्तव्य समझता है। इसलिए गवरी में अभिनेताओं की संख्या 40 से 100 भी हो जाती है।

आज देशभर में गवरी जैसा कोई खेल देखने को नहीं मिलेगा जो इतनी लंबी अवधि तक पात्रों के इतने बड़े समूह, विविध गांवों में इतने सुव्यवस्थित ढंग से दिनभर प्रदर्शित किया जाता हो।

लेखक की इससे पहले बाल-साहित्य पर कई किताबें प्रकाशित हो चुकी हैं। सवा हाथ का गंगाराम, अनोखा कुंवर, साब का टोकर, हम भी ऐसे बनें आदि उनकी चर्चित किताबें हैं।

उनकी अब तक 9 हजार रचनाएं व 95 से ज्यादा पुस्तकें भी प्रकाशित हो चुकी हैं। राजस्थान के उदयपुर स्थित कानोड़ में जन्मे महेंद्र को राजस्थान संगीत नाटक अकादमी ने भी सम्मानित किया है।

प्रकाशक- राजकुमार जैन 'राजन', चित्रा प्रकाशन, आकोला-312205, (राज.), मूल्य 100 रूपया, मो. 9828219919 | राजस्थान पत्रिका, परिवार परिशिष्ट, 25 अप्रेल 2018 से साभार

आदिवासी लोक का आलोक

-डॉ. पूरन सहगल-

आदिवासियों की जीवनधारा, समस्याओं एवं चुनौतियों को लेकर बड़ी-बड़ी जगह, बड़े-बड़े तामजाम और बड़े-बड़े ज्ञानीजनों के साथ बड़े-बड़े सेमीनार, बड़ी-बड़ी संगोष्ठियां, बड़ी-बड़ी कार्यशालाएं तथा बड़ी-बड़ी प्रदर्शनियों का आयोजन होता है। मैं इनका साक्षी रहा। वहां सबकुछ होता है परन्तु जिन्हें प्राथमिकता से होना होता है, वे आदिवासी नहीं होते। वहां विचार करने वाले तो होते हैं मगर कुछ करने वाले नहीं होते। सुझाव देने वाले तो होते हैं मगर साझा करने वाले नहीं होते। कहते हैं, दीवारों के कान होते हैं तो वहां दीवारें अवश्य सुनती होंगी किन्तु जिनसे सुनना, सुनकर समझना, समझकर चिन्तन करना तथा चिन्तन कर समस्या का स्थायी निष्कर्ष-निदान करना नहीं होता।

लोक को जानना, समझना और बखानना वैसा ही कठिन है जैसा ब्रह्म को पहचानना। लोक और ब्रह्म अनादि अनन्त और अगम होता है। दोनों एक समान हैं। जहां तक यह कायनात विस्तारित है वहां तक लोक भी विस्तारित है। जो जितना जान लेता है वह उतना ही बखान पाता है। लोक तो फिर भी अव्यक्त बना रहता है।

डॉ. महेन्द्र भानावत की सद्य प्रकाशित पुस्तक 'आदिवासी लोक' उनकी सुदीर्घ साधना का लोक-प्रसाद है। डॉ. भानावत ने जितना आदिवासी लोक को जाना, समझा और महसूसा है उतना हमारी पीढ़ी में दूसरा कोई नहीं है। उनका सबसे पहला चरण 'गवरी' था। गवरी पर उनका शोध-कार्य था। सम्भवत: गवरी पर शोधरत रहते उन्होंने लोक का सामीप्य प्राप्त किया और उसके बाद तो वे लोकमय हो गये। आदिवासी जीवन के प्रत्येक क्षण को उन्होंने जीने का प्रयास किया। उनका रहन-सहन, खान-पान, पहन-पहनावा, नृत्य-गान-संगीत और वाद्य, विवाह, जन्म-मृत्यु यहां तक कि उनके समस्त सामाजिक एवं सांस्कृतिक भाव-विभाव और यात्रा-पड़ाव भी डॉ. भानावतजी के मंजिल-मुकाम बन गए। उन्होंने यही बात अपनी इस पुस्तक में लिखी है।

'खोज की पगडंडियां कितनी नाप पाती हैं- 'ज्यों-ज्यों बूढ़े श्याम रंग, त्यों-त्यों उज्ज्वल होय।' जैसे एक परमेश्वर अनेक हो सकते हैं वैसे ही आदिवासियों में जो कुछ मिलता है, उसका रूप-प्रतिरूप-स्वरूप अन्यत्र भी मिलता है पर उसे किसने कितना ग्रहण किया, कहना मुश्किल है।' डॉ. भानावत ने अपने प्रारंभिक लेखकीय वक्तव्य को भी उतना ही सारपूर्ण संदर्भित बनाया है। बड़े-बड़े वार्ता-समूहों को अपनी अनुभवी आंखों से देख उनका यह सोच कितना सार्थक है। उन्होंने लिखा कि आदिवासियों की जीवनधारा, समस्याओं एवं चुनौतियों को लेकर बड़ी-बड़ी जगह, बड़े-बड़े तामजाम और बड़े-बड़े ज्ञानीजनों के साथ बड़े-बड़े सेमीनार, बड़ी-बड़ी संगोष्ठियां, बड़ी-बड़ी कार्यशालाएं तथा बड़ी-बड़ी प्रदर्शनियों का आयोजन होता है।

मैं इनका साक्षी रहा। वहां सबकुछ होता है परन्तु जिन्हें प्राथमिकता से होना होता है, वे आदिवासी नहीं होते। वहां विचार करने वाले तो होते हैं मगर कुछ करने वाले नहीं होते। सुझाव देने वाले तो होते हैं मगर साझा करने वाले नहीं होते। कहते हैं, दीवारों के कान होते हैं तो वहां दीवारें अवश्य सुनती होंगी किन्तु जिनसे सुनना, सुनकर समझना, समझकर चिन्तन करना तथा चिन्तन कर समस्या का स्थायी निष्कर्ष-निदान करना नहीं होता। यह सूत्र केवल डॉ. महेन्द्र भानावत के लिए ही नहीं है अपितु लोकसाहित्य पर काम करने वाले सभी शोधार्थियों के लिए एक समान लागू होता है।

'आदिवासी लोक' ग्रंथ में डॉ. भानावतजी ने भील समुदायों को अत्यन्त निकट से देखा-परखा है। उनके नृत्यों में, गायन में वे शामिल रहे हैं। जिस प्रकार भीलों के अनुष्ठानपरक गवरी में सृष्टि के उद्भव को बताते हुए जो गाथा गाई जाती है वह वासुक से जुड़ी गाथा है किन्तु वही गाथा भील आदिवासियों के आस्था और विश्वास का भी समाधान कर देती है।

प्रस्तुत समीक्षक कृति में आदिवासी समाज की भुवाई, चित्रकला, डाम परम्परा, देवनारायण की आस्था, शिव-पार्वती-लीला, सांपों का संसार और अश्व बखान अत्यन्त रोचक, मनोरंजक एवं शोधपरक झलक-झरोखे हैं। इनमें झांक कर हम आदिवासी लोक का दिग्दर्शन भलीभांति कर सकते हैं। इन्हें झरोखे या गोखड़े कहना इसलिए उचित है कि इनमें से हम उस समाज के समग्र जीवन दर्शन का निरीक्षण कर सकते हैं। उसके दर्शन कर कृतार्थ हो सकते हैं।

डाम उपचार पर तो डॉ. भानावत ने अत्यन्त गहनतापूर्वक जानकारी प्रस्तुत कर दी है। डाम के अलग-अलग प्रकार बताकर जो चित्र समूह प्रदर्शित किया है वह अद्भुत है। आदिवासी समूह में आज भी यह उपचार किया जाता है। मनुष्यों पर भी और पशुओं पर भी इस उपचार को पूरे विश्वास के साथ किया जाता है। इस विज्ञान पर तो और अधिक शोध होना चाहिये। उपचार की यह एक पारम्परिक प्रक्रिया शरीर के समस्त रोगों के लिए लागू होती है। चित्रपट को देखकर ऐसा लगता है मानो किसी ने चीनी लिपि लिख दी हो।

क्या आश्चर्य कि चीनी लिपि का यह आदि उद्भव हो। आदिवासी लोकजीवन के चरण-चरण, दैनिक व्यवहार, रीति-नीति, जीवनचर्या एवं आस्था-विश्वास का यह विश्रुत ग्रंथ है। सचमुच यह एक विचित्र लोक ही है। संज्या से लोक श्रवण तक के अनेक पारम्परिक लोक चित्रावण, लोक मान्यताएं, लोक पर्व एवं लोक त्यौहारों का गोखड़ा हमें अनेक चमत्कारिक एवं लोक मान्यताओं की झलक-झांकियां दिखा देता है।

जो लोग आदिवासी लोक पर काम करना चाहेंगे उनके लिए यह ग्रंथ एक जीवित दिशा-निदेशक का काम करेगा। यह ग्रंथ एक प्रकार से आदिवासी लोक का सायक्लोपीडिया है। ऐसा ग्रंथ पहली बार सम्पूर्णता एवं समग्रता के साथ हमारे हाथों पड़ा है। यह ग्रंथ जहां संग्रहणीय है वहीं बार-बार पठनीय भी है। डॉ. महेन्द्र भानावत की आदिवासी जीवन पर अब तक की गई अनेक शोध-यात्राओं का सार भी है यह ग्रंथ। समुद्र मंथन के अमृत की तरह यह 'आदिवासी लोक' अभिनन्दनीय है। आदिवासी लोक, डॉ. महेन्द्र भानावत, सुभद्रा पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, दयालपुर, दिल्ली, 2015, मूल्य 350, पृष्ठ 200 है।

महाराणा मेवाड़ पब्लिक स्कूल में त्रिमूर्ति स्थापना

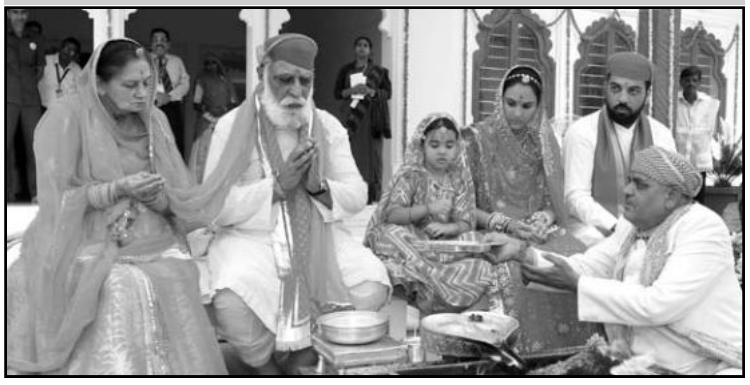

उदयपुर। सिटी पैलेस परिसर स्थित महाराणा मेवाड़ पब्लिक स्कूल के मोती महल में गणेशजी, सरस्वतीजी एवं लक्ष्मीजी की मूर्तियां स्थापित की गई। स्कूल के प्राचार्य संजय दत्ता ने बताया कि मंदिर में मूर्तियों की प्राण प्रतिष्ठा एवं स्थापना को लेकर शुरू हुए वैदिक पूजन एवं हवन को पूर्णाहुति दी गई। समारोह में विद्यादान ट्रस्ट के अध्यक्ष एवं प्रबंध न्यासी श्रीजी अरविन्द सिंह मेवाड़, उनकी धर्मपत्नी विजयाराजे कुमारी मेवाड़, ट्रस्टी लक्ष्यराज सिंह मेवाड़, उनकी पत्नी निवृत्ति कुमारी मेवाड़ एवं उनकी पुत्री मोहलक्षिका कुमारी मेवाड़ उपस्थित थे।

एमपी बिड़ला हॉस्पिटल एवं रिसर्च सेंटर जनता को समर्पित

उदयपुर। एमपी बिड़ला हॉस्पिटल एवं रिसर्च सेंटर, चित्तौड़गढ़ बुधवार को राजस्थान की जनता को समर्पित किया गया। यह चिकित्सालय एमपी बिड़ला समूह द्वारा स्वास्थ्य देखभाल के क्षेत्र में नवीनतम प्रयास को दर्शाता है। कॉर्पोरेट सर्विसेज बिरला कॉर्पोरेशन के शांतनु मलिक, एमपी बिरला ग्रुप के सह अध्यक्ष कॉर्पोरेट कम्युनिकेशन बिस्वजीत मतिलाल, एमपी बिरला हॉस्पिटल एण्ड रिसर्च सेंटर चित्तौड़गढ़ के मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ. सुमन कर ने कहा कि यह चिकित्सालय सोनालॉजिस्ट के साथ अत्याधुनिक और विस्तृत रेडियोलॉजी इकाई है जो कि सीटी स्केन, एक्स रे, यूएसजी, टीएमटी, इको एवं होल्टर सुविधा युक्त है। सभी आधुनिक सुविधायुक्त पैथोलॉजिकल लेब जो कि हेमोटोलॉजी, बायोकैमिस्ट्री, सैरोलॉजी, हिस्टोपैथोलॉजी के लिए सर्वोपयुक्त है। कुशल प्रशिक्षित चिकित्सकों द्वारा सातों दिन 24 घंटे आपातकालीन देखभाल, कुशल स्टाफकर्मियों द्वारा आईसीयू, आईटीयू इकाई, नवजात शिशु देखभाल इकाई, सर्जिकल संक्रमण से सुरक्षित मॉड्यूलर ऑपरेशन थियेटर, चौबीस घण्टे फार्मेसी उपलब्ध है।

बजाज फिनसर्व की फ्लेक्सी ऋण सुविधा

उदयपुर। बजाज फिनसर्व अपनी शीर्ष इकाई बजाज फायनेंस लि. के माध्यम से अपने ग्राहकों को फ्लेक्सी लोन की सुविधा उपलब्ध करवा रही है, ताकि वे अपनी वित्तीय आवश्यकताओं को पूरा कर सकें। इस सुविधा के तहत ग्राहकों को ऋण की सीमा निर्धारित की जाएगी, जिसमें वे आसानी से वांछित राशि ऋण के रूप में प्राप्त कर सकेंगे और इनका भुगतान अपनी वित्तीय परिस्थितियों के अनुसार कर सकेंगे। इस सुविधा के तहत विशेष ऋण के साथ ही व्यापारिक ऋण (बिजनेस लोन) भी उपलब्ध हो सकेगा। ग्राहक केवल ब्याज को ईएमआई के विकल्प के रूप में चुन सकते हैं और मूल राशि समयावधि पूरी होने पर एक मुश्त जमा करवा सकते हैं या फिर ब्याज और मूल धन एक साथ ऋण अवधि के पूरा होने पर एक साथ जमा करवा सकते हैं।

2,400 करोड़ में बिका इक्विनॉक्स बिजनेस पार्क

उदयपुर। एस्सार ने मुंबई के बांद्रा-कुर्ला कॉम्प्लेक्स में अपनी वाणिज्यिक संपत्ति इक्विनॉक्स बिजनेस पार्क को 2,400 करोड़ रुपये के उद्यम मूल्य पर एक अग्रणी वैश्विक परिसंपत्ति प्रबंधक ब्रुकफील्ड एसेट मैनेजमेंट को बेचे जाने की प्रक्रिया पूरी कर ली है।

एस्सार के अंशुमान रुइया ने कहा कि मुंबई के प्राइम सीबीडी में स्थित इक्विनॉक्स बिजनेस पार्क 10 एकड़ में फैला हुआ है। इसमें चार टावर शामिल हैं और किराए पर देने के लिए 1.25 मिलियन वर्गफुट का ऑफिस स्पेस है।

ब्रुकफील्ड के रियल एस्टेट हेड (इंडिया) अंकुर गुप्ता ने कहा कि इस लेनदेन को पूरा करने के लिए एस्सार ग्रुप को सहयोगी पाकर खुशी हुई। हम मुंबई की मुख्य बिजनेस डिस्ट्रिक्ट में ब्रुकफील्ड की प्लेसमेकिंग क्षमताओं को लेकर उत्साहित हैं।

वंडर सीमेंट टाउन हॉल का शिलान्यास

उदयपुर। निम्बाहेड़ा में राज्य सरकार एवं वंडर सीमेंट लि. के सौजन्य से शहरी जनसहभागिता योजनान्तर्गत वंडर सीमेंट टाउन हॉल का शिलान्यास राजस्थान की मुख्यमंत्री श्रीमती वसुंधराराजे सिंधिया ने जनसंवाद कार्यक्रम से पूर्व विकास प्रदर्शनी के उद्घाटन के दौरान किया।

शिलान्यास के दौरान एस.एम. जोशी (अध्यक्ष-वर्क्स) एवं नितिन जैन उपाध्यक्ष (वाणिज्य) ने मुख्यमंत्री का पुष्प-गुच्छ भेंटकर अभिनंदन किया। कार्यक्रम में स्वायत्त शासन एवं नगरीय विकास, आवासन मंत्री, राजस्थान-सरकार, श्रीचंद कृपलानी ने वंडर सीमेंट द्वारा सी.एस.आर. के तहत किये जा रहे विकास कार्यों के बारे में मुख्यमंत्री को अवगत कराया।

एचडीएफसी बैंक के क्षेत्रीय कार्यालय का शुभारंम्भ

उदयपुर। एचडीएफसी बैंक ने जयपुर में अपने क्षेत्रीय कार्यालय का शुभारंम्भ किया। इसके साथ ही बैंक के अब देश भर में 14 क्षेत्रीय कार्यालय हो गये हैं। इस नये क्षेत्रीय कार्यालय का उदघाटन केजीके समूह के चेयरमैन नवरतन कोठारी ने किया। इस अवसर पर स्मिता भगत, ग्रुप हैड, ब्रांच बैंकिंग सहित गणमान्य नागरिक एव बैंक के ग्राहक उपस्थित थे। बैंक के इस नये भवन में करेंसी चेस्ट, शाखा, क्षेत्रीय कार्यालय एवं कैफेटेरिया होंगे। यह भवन 0-10, सी स्कीम, अशोक मार्ग जयपुर पर स्थित हैं वर्तमान में राजस्थान में एचडीएफसी बैंक की 176 शाखाऐं एवं 340 एटीएम हैं।

अज़ाफ्रॉन का बेबी केयर सेगमेन्ट में प्रवेश

उदयपुर। पर्यावरण के अनुकूल उत्पाद बनाने की प्रतिबद्धता को आगे बढ़ाते हुए अज़ाफ्रॉन इनोवेशन लि. ने बेबी केयर सेगमेन्ट में प्रवेश का ऐलान किया है। ओर्गेनिक पर्सनल केयर बाज़ार में अपने आप को मजबूती से स्थापित करने के बाद कंपनी अब बेबी केयर उत्पादों की नई रेंज लेकर आई है। कंपनी आधुनिक रीटेल स्टोर्स, मल्टी-ब्राण्ड आउटलेट्स और जनरल ट्रेड के माध्यम से विस्तार की योजना बना रही है और इसके लिए बड़े रीटेल चेन्स के साथ क़रार भी कर रही है।

'स्मार्ट कनेक्टेड एसेंबली' लॉन्च

उदयपुर। एटलस कॉप्को इंडिया ने इंडस्ट्री 4.0 के विजन को समर्थन देते हुए 'स्मार्ट कनेक्टेड एसेंबली' को लॉन्च किया है। इंडस्ट्री 4.0 में एटलस कॉप्को का योगदान: विनिर्माण एवं एसेंबली का डिजिटलीकरण को ही 'स्मार्ट कनेक्टेड एसेंबली' कहते हैं। एटलस कॉप्को (इंडिया) लि. के महाप्रबंधक, भाविन पांड्या ने बताया कि भारतीय ग्राहक उच्च गुणवत्ता वाले उत्पादों एवं नई तकनीकों की अधिकाधिक मांग कर रहे हैं, जो लचीलापन, डेटा एनालिटिक्स, अर्गोनॉमिक्स एवं ऊर्जा की कम खपत प्रदान करेगा। प्रतिस्पर्द्धी लाभ प्राप्त होगा। स्मार्ट कनेक्टेड एसेंबली पूरी तरह से नये स्तर के समाधान उपलब्ध कराकर इन नई चुनौतियों का समाधान करेगा, प्रवृत्तियों एवं आवश्यकताओं को पूरी करेगा।

एचडीएफसी बैंक को 4799.3 करोड़ का शुद्ध लाभ

उदयपुर। एचडीएफसी बैंक लि. ने 31 मार्च 2018 को समाप्त हुई तिमाही के दौरान 2495.3 करोड़ रूपये के कर भुगतान के पश्चात कुल 4799.3 करोड़ रूपये का शुद्ध लाभ अर्जित किया है, जो 31 मार्च 2017 को समाप्त हुई तिमाही के मुकाबले में 20.3 प्रतिशत ज्यादा है।

एचडीएफसी बैंक लि. के बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स ने मुंबई में आयोजित मीटिंग में 31 मार्च 2018 को समाप्त हुई तिमाही के लिए बैंक के परिणामों की घोषणा की। 31 मार्च 2018 को समाप्त तिमाही के लिए, बैंक ने 25,549.7 करोड़ रूपये की कुल आय हासिल की। यह 31 मार्च 2017 को समाप्त तिमाही के 21,560.7 करोड़ रूपये से अधिक है। 31 मार्च 2018 को समाप्त वर्ष तिमाही के लिए शुद्ध राजस्व (शुद्ध ब्याज आयअन्य आय) 14,886.3 करोड़ रूपये रहा। इसमें पिछले साल के 12,501.4 करोड़ रूपये की तुलना में 19.1 प्रतिशत की वृद्धि देखने को मिली।

यस बैंक और फिक्की में भागीदारी

उदयपुर। यस बैंक ने 'द ग्रेट इंडियन बाजार 2018' के लिए फिक्की के साथ भागीदारी की है। इस समारोह के मौके यस बैंक-फिक्की के भारत में विदेशी पर्यटन पर संयुक्त रपट, 'इनबाउंड पर्यटन- अगले चरण की वृद्धि के लिए रणनीतियों की विवेचना' (इनबाउंड टूरिज्म- डिकोडिंग स्ट्रेटेजी फॉर नेक्स्ट स्टेज ऑफ ग्रोथ) भी जारी हुई जिसमें भारत में विदेशी पर्यटन को बढ़ने के लिए, नीतिगत हस्तक्षेप की रूपरेखा प्रस्तुत की गयी है जो प्रमुख राज्यों में की गई प्रमुख मौजूदा पहलों पर केन्द्रित है। इस रपट को राजस्थान की मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे ने केन्द्रीय पर्यटन मंत्रालय की सचिव रश्मि वर्मा, राजस्थान के मुख्य सचिव एन सी गोयल और राजस्थान के अतिरिक्त मुख्य सचिव डॉ. सुबोध अग्रवाल, यस बैंक के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी और यस ग्लोबल इंस्टिट्यूट के अध्यक्ष राणा कपूर की मौजूदगी में यह रपट जारी की।

अब और आसान हुई बैंकिंग प्रणाली

उदयपुर। सामान्यतया बैंकिंग सेक्टर में खाते खुलवाने से लेकर लेन-देन की प्रक्रिया में जटिलता और अनावश्यक देरी से आमजन गाहे-ब-गाहे जूझता देखा जा सकता है। बहुत दफा बैंक ब्रांच की दूरी, स्टाफ और कैश की कमी तथा छुट्टियों के कारण भी पैसों की सुविधा वक्त जरूरत बाधित होने से परेशानियां खड़ी हो जाती हैं लेकिन, आधार और तकनीक के बढ़ते प्रसार के साथ शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में रह रहे आमजन के लिए राज्य सरकार की ई मित्र पहल तथा भारत पेट्रोलियम के साथ सहयोग से फिनो पेमेंट्स बैंक की डिजिटल बैंकिंग के माध्यम से अब त्वरित सुविधाओं का मार्ग प्रशस्त हो सकेगा।

फिनो पेमेंट्स बैंक के एमडी और सीईओ ऋषि गुप्ता ने बताया कि दिसंबर 2017 में फिनो ने राज कॉम्प के सहयोग से बैंक के समष्टीगत (कॉर्पोरेट) व्यावसायिक प्रतिनिधि के रूप में स्थापित होकर राज्य के 33 जिलो में राज कॉम्प के सभी 55,000 ई मित्र आऊटलेट्स फिनो बैंकिंग के केंद्र के रूप में काम आरंभ कर दिया है।

सीमेंट ब्रांड 'परफैक्ट प्लस' लॉन्च

उदयपुर। एमपी बिड़ला सीमेंट ने अपने नए सुपर प्रीमियम ब्रांड, परफैक्ट प्लस, को चंदेरिया, चित्तौडगढ़ राजस्थान और मैहर, मध्यप्रदेश के प्लांट्स से लॉन्च किया है। सुपर टैक्नोलॉजी उत्पाद में 'हाइपर एक्टिव मॉलीक्यूल्स', के साथ सीमेंट के अल्ट्रा-फाइन कणों को बढ़ाया गया है। इसके परिणामस्वरूप सुपीरियर बाइंडिंग जेल सीएसएच के गठन में सुधार होता है जो कंक्रीट के प्रदर्शन को और भी बेहतर करता है। एमपी बिरला सीमेंट के एग्जीक्यूटिव प्रेसिडेंट संदीप रंजन घोष ने कहा कि कंपनी ग्राहकों के लिए मूल्यवर्धित विशेषताओं की पेशकश करने के लिए लगातार प्रयासरत है। एमपी बिड़ला सीमेंट इस बात को अच्छी तरह से समझता है कि घर बनाना, प्यार से किया गया श्रम है, इसलिए, सीमेंट की आपूर्ति तक ही सीमित नहीं रहता है, बल्कि अपने विश्वास के अनुसार, घर निर्माता के साथ 'सीमेंट से घर तक' की सोच के साथ संपूर्ण सहभागिता करता है।

लार्ज होटल पोर्टफोलियो पर लगाया बड़ा दांव

उदयपुर। भारत की सबसे बड़ी हॉस्पिटेलिटी कंपनी ओयो ने अपने फ्रैंचाइज एवं मैनेजमेन्ट कॉन्ट्रेक्ट के तहत 100 कमरों से युक्त बड़े इन्वेंटरी पोर्टफोलियो के लिए होटलों और रियल एस्टेट असेट्स के साथ साझेदारी के द्वारा भारतीय होटल बाज़ार पर बड़ा दांव लगाया है।

आने वाले सालों में ओयो ने अपनी लार्ज-असेट कैटेगरी में 10,000 से अधिक कमरे शामिल करने का लक्ष्य तय किया है। इसके साथ ओयो सम्पत्ति मालिकों को अधिकतम रिटर्न और उपभोक्ताओं को उत्कृष्ट सेवाएं प्रदान कर इस क्षेत्र में अपने आप को अग्रणी स्थिति पर स्थापित कर लेगी। वर्तमान में ओयो 12 ऐसे होटलों के साथ पहले से साझेदारी कर चुकी है और दिल्ली, गोवा, बैंगलुरू, तिरूपति, हैदराबाद, नोएडा, वृंदावन और पटना सहित कई शहरों में इन होटलों का प्रबन्धन कर रही है।

अनुष्का स्टैंडर्ड चार्टर्ड बैंक की ब्रांड एंबेसडर

उदयपुर। स्टैंडर्ड चार्टर्ड बैंक ने अपनी खुदरा डिजिटल बैंकिंग पहलें लॉन्च की। इन सेवाओं के लॉन्च हो जाने से, ग्राहक रियल टाईम आधार पर खाता खोलने से लेकर रिलेशनशिप मैनेजर्स (आरएम) के साथ डिजिटल तरीके से बात करने तक विभिन्न बैंकिंग सेवाओं का निर्बाध रूप से लाभ उठा सकेंगे। स्टैंडर्ड चार्टर्ड बैंक के सीईओ जरीन दारूवाला ने कहा कि बैंक ने आज तुरंत डिजिटल खाता खोलने की सुविधा शुरू की, जिसकी मदद से ग्राहक ऑनलाइन या मोबाइल इंटरफेस के जरिए अपने आधार की जानकारी का उपयोग कर तत्काल बचत खाता खोल सकते हैं। युवा कार्यबल से मजबूत जुड़ाव के लिए बैंक ने अभिनेत्री अनुष्का शर्मा को ब्रांड एंबेसडर नियुक्त किया है।

हर 4 में से एक कर्मचारी नहीं समझता टेक्स बेनिफिट्स

उदयपुर। हाल ही के एक सर्वेक्षण से पता चला है कि कर के दायरे में आने वाले हर चार वेतनभोगी कर्मचारियों में से एक को 'कर्मचारी कर लाभों द्वारा प्रदत्त कर बचत संभावनाओं' के बारे में जानकारी नहीं है, जो उनके वेतन का एक हिस्सा होता है। निल्सन इंडिया ने 'जीटा इंप्लॉयी बेनेफिट्स स्टडी' में 7 शहरों के 194 कंपनियों के 1233 कर्मचारियों का सर्वेक्षण किया। इसमें कर्मचारी कर लाभों और भारत में इसकी वर्तमान स्थिति के बारे में गहन अध्ययन किया गया । सर्वेक्षण में खुलासा हुआ कि 56 प्रतिशत वेतनभोगी कर्मचारी भुगतान लेना नहीं चाहते हैं और वे उन्हें प्रदान किये जाने वाले कर लाभों की पूरी संभावना का उपयोग नहीं करते हैं।

जीटा के सीटीओ एवं सह-संस्थापक, रामकी गद्दीपति ने बताया कि कर लाभ, कंपनियों द्वारा वेतनभोगी कर्मचारियों को उनके सीटीसी के तहत प्रदान किया जाने वाला कर बचत लाभ है। इनमें ईंधन, टेलीफोन का उपयोग, एलटीए, गैजेट भुगतान अदायगी, गिफ्ट वाउचर्स व अन्य के लिए किये जाने वाले भुगतान शामिल हैं।

सर्वेक्षण में सामने आया कि टेलीकॉम भुगतान, कंपनियों द्वारा प्रदान किया जाने वाला सबसे लोकप्रिय कर लाभ है। इसके बाद ईंधन, एलटीए एवं गैजेट भुगतान आता है। हालांकि, कर्मचारी कर भुगतान के प्रबंधन की बात आने पर, 94 प्रतिशत कंपनियां अभी भी जटिल एवं अधिक समय लेने वाली कागजी प्रक्रियाओं का उपयोग करती हैं। 62 प्रतिशत कर्मचारियों ने कहा कि भुगतान का दावा करने की प्रक्रिया अधिक समय लेती है।

आईएसओ 9001:2015 प्रमाणन मिला

उदयपुर। केनरा एचएसबीसी ओरियंटल बैंक ऑफ कॉमर्स लाईफ इंश्योरेंस कंपनी ने घोषणा की कि कंपनी के भीतर गुणवत्तापूर्ण प्रबंधन मानक स्थापित करने हेतु इसे आईएसओ 9001:2015 प्रदान किया गया है। मुख्य कार्यकारी अधिकारी अनुज माथुर ने कहा कि हमने अपनी प्रणालियों एवं प्रक्रियाओं को एकीकृत किया है। आंतरिक नियंत्रणों को मजबूत बनाया है और ग्राहकों को बेहतर अनुभव प्रदान करने हेतु लगातार वैश्विक मानकों का पालन करते रहे हैं। आईएसओ 9001:2015 को इस प्रकार से डिजाइन किया गया है ताकि कंपनियों को यह सुनिश्चित करने में मदद मिल सके कि वे उत्पाद या सेवा से जुड़े वैधानिक एवं विनियामक आवश्यकताओं को पूरी करते हुए ग्राहकों एवं अन्य शेयरधारकों की आवश्यकताएं पूरी करती हैं।

अनुभवी उदाहरणों ....

(पृष्ठ दो का शेष)

हम लोगों ने प्रताप के माहात्मय को भी ठीक ढंग से प्रतिपादित नहीं किया। प्रताप समूची भारतीय स्वाधीनता के प्रतीक थे। उनका संघर्ष मुसलमानों से नहीं होकर विदेशी आक्रांताओं से था। प्रताप अकबर को विदेशी आक्रांता मानते थे और अपने को भारत का कानूनी शासक समझते थे। इस संबंध में स्वरूपसिंहजी चूंडावत ने वैधानिक रूप से प्रताप की अस्मिता को पुरजोर शब्दों में रेखांकित करते हुए स्पष्ट किया था जिसका मैंने अपने एक आलेख में उल्लेख किया था।

यह आलेख धर्मयुग में प्रताप जयंती के संदर्भ में 27 मई 1984 को जननायक प्रताप : स्वाधीनता का चिरंतन शीर्षक से प्रकाशित हुआ। उसमें लिखा था- ''इतिहासज्ञ स्वरूपसिंह चूंडावत के शब्दों में - 'प्रताप अपने को भारत का स्वयंसिद्ध कानूनी शासक मानते थे और अकबर को एक ऐसा अतिक्रमी जिसने बलपूर्वक भारत की स्वाधीनता का अपहरण कर लिया था। अकबर स्वयं भलीप्रकार जानता था कि एक विदेशी आक्रांता के रूप में बलपूर्वक मेवाड़ का राज्य छीन लेने से अंतर्राष्ट्रीय कानून उसे कानूनी हैसियत प्रदान नहीं करेगा इसलिए वह चाहता था कि प्रताप यदि उसकी अधीनता स्वीकार कर ले तो भारत में उसकी मान्यता वैधानिक व न्यायसंगत हो जायेगी नहीं तो भारतीय जनता प्रताप को ही अपना हृदय सम्राट मानकर स्वाधीनता का युद्ध जारी रखेगी और हुआ भी यही।''

इसी आलेख के अंत में मैंने मेवाड़ काम्प्लेक्स के बारे में जानकारी दी थी। चूंडावतजी ने इसे पढ़कर न केवल मुझे शाबाशी दीं बल्कि यह भी कहा था कि इसके माध्यम से मैंने सरकार को भी कुछ ठोस कार्य करने के लिए बांध दिया है।

मैंने लिखा- 'देर से ही सही पर अब सरकार चेती है और प्रताप संबंधी स्मारकों को सही रंग-ढंग देने के लिए मेवाड़ कॉम्प्लेक्स की स्थापना की गई है जिसके एक सदस्य डॉ. गोपीनाथ शर्मा बनाये गये हैं। डॉ. शर्मा ने मुझे बताया कि इसके अंतर्गत हल्दीघाटी, चावंड, कुंभलगढ़ और गोगुन्दा के स्मारकों का विकास व रखरखाव किया जायेगा। हल्दीघाटी को उसी तरह की तंग घाटी के रूप में परिवर्तित किया जायेगा जैसी वह पहले रही है। उसी तरह की झाड़ियां और वृक्ष लगाये जायेंगे ताकि वैसा ही वातावरण बन सके।

चेटक चबूतरे को भी पूर्ण रूप दिया जायेगा। इसमें चेटक जिस नाले में कूदा, उस स्थान का महत्व बढ़ जायेगा। रक्ततलाई के आसपास जहां अब पंचायत समिति के मकानात बन गये हैं उन्हें हटाकर चारों ओर दीवार बना दी जायगी। बादशाह बाग का विस्तार किया जायेगा। चावंड के पुराने महलों को सुरक्षित किया जायेगा। यह सब कुछ ऐसा बनाया जायेगा जैसे हम उसी शताब्दी में जीकर सारी चीजों को अपनी आंखों से घटित हुई जान रहे हों।' और अंत में लिखा था- 'नई सरकार के हाथ लंबे हैं और ये योजनाएं भी कम लंबी नहीं हैं। देखना यह है कि कैसे इतिहास की शुद्धि हो और समय इतना लम्बा न खिंचे कि इस 'मेवाड़' में कई तरह के कॉम्प्लेक्स आ जायें।

अब न चूंडावतजी हैं और न डॉ. शर्माजी। सरकार चलती रहेगी और मेवाड़ कॉम्प्लेक्स योजना के कागज भी सरकते रहेंगे। वे सरकते रहें भले ही पर उनके साथ-साथ कहीं हल्दीघाटी और उसकी दास्तानें ही नहीं सरक जायें।

उदयपुर की और बाहर की भी कई संस्थाओं के चूंडावतजी सूत्रधार थे। उनकी स्थापना, विकास और उत्कर्ष के वे संबल थे। विद्वानों, जिज्ञासुओं, रसिकों से लेकर विद्यार्थियों तथा सामाजिकों का निरन्तर उनके वहां आना-जाना बना रहता था। प्रात: भ्रमण के दौरान अक्सर मेरी उनसे भेंट हो जाया करती थी तब वे मुझसे मेरे लेखन के बारे में पूछ लिया करते थे। कभी-कभी मेरे लिए उपयोगी सामग्री का भी संदर्भ, सूत्र दे दिया करते।

एक दिन सुबह मैं प्रताप और आदिवासियों से संबंधित अपने लेखन को लेकर उनके घर चला गया ताकि कुछ जानकारी प्राप्त कर सकूं साथ ही कुछ प्रश्नों का समाधान भी ले सकूं लेकिन उस दिन वे गंभीर बीमारी के दौर से गुजर रहे थे। घरवाले सभी गुमसुम थे। मुझे तब ही उनकी अवस्था का पता चला। मैं जैसे निष्प्राण, भारी मन लिये लौटा। उसके दो दिन बाद अचानक प्रो. देवकर्णसिंहजी से उनके निधन के समाचार पाकर हतप्रभ रह गया। महासतियांजी में 18 फरवरी 2004 को मैंने देखा, उनके चाहने वालों का अपार एकत्रीकरण, गमगीन और डूबे-मन का समुद्र। वहीं ओंकारश्री ने मेरी डायरी में एक पन्ने पर अपनी पीड़ को व्यक्त करते श्रद्धास्वर में यह दोहा लिखा-

भासा भूसण भारती, संस्कृति सदन सरूप।
कीरत हंदो कोटड़ो, सरगां सिध्यौ सरूप।।

सचमुच में चूंडावतजी अपने कथन में इतिहास से भी अधिक सच्चाई लिये जिये। वे लोकजीवन के भी उतने ही सत्य पारखी थे।

बालसाहित्य सम्मानों हेतु आवेदन आमन्त्रित

राजकुमार जैन 'राजन' फाउंडेशन, चित्रा प्रकाशन, आकोला (राज.)-312205 द्वारा अखिल भारतीय स्तर पर बाल साहित्य सम्मानों हेतु अनुशंषाएँ 20 सितम्बर 2018 तक सादर आमंत्रित हैं। इसके तहत 21 हजार का राष्ट्रकवि प. सोहनलाल द्विवेदी सम्मान, 5-5 हजार के डॉ. राष्ट्रबन्धु स्मृति वरिष्ठ तथा युवा बाल साहित्यकार सम्मान, डॉ श्रीप्रसाद स्मृति वरिष्ठ तथा युवा बाल साहित्यकार सम्मान, उत्कृष्ठ बाल पत्रिका सम्मान, चन्द्रसिंह बिरकाली राजस्थानी सम्मान, 31 सौ का डॉ बालशौरि रेड्डी स्मृति सम्मान, बाल साहित्य उन्नयन सम्मान एवं 21 सौ के बाल साहित्य सृजन के लिए 11 स्मृति सम्मान प्रदान किये जायेंगे। उपरोक्त सम्मान बाल साहित्य सृजन, उन्नयन, प्रचार प्रसार के क्षेत्र में महनीय योगदान करने वाले रचनाकारों को दिया जाएगा। पुस्तकों के साथ, बाल साहित्य के प्रचार प्रसार के लिए किए जा रहे प्रयासों का विवरण भी भेजना होगा। अधिक जानकारी व्हाट्सएप्प न. 9828219919 ले सकते हैं।

सक्का वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में

उदयपुर के स्वर्ण शिल्पी इकबाल सक्का द्वारा बनाये गये विश्व के सबसे छोटे चांदी के ताश सेट को गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में दर्ज किया गया है। आठ गुणा छह मिलीमीटर साईज के 52 ताश के पत्तों का वजन मात्र 2 ग्राम है।

डॉ. धींग कविरत्न से सम्मानित

जैन दर्शन के विद्वान डॉ. दिलीप धींग को पिछले दिनों संवेदना साहित्य समिति उरई उ.प्र. द्वारा कविरत्न सम्मान प्रदान किया गया। डॉ. धींग के तीन काव्य संकलन प्रकाशित हैं।

हमारे पास शब्द रंजन है आपके पास और भी बहुत कुछ कृपया सहयोग करें

संरक्षक	11000/
विशिष्ट सदस्य	5000/
आजीवन सदस्य	3000/
शब्दरंजन के सहयात्री	1000/
साहित्यिक चौपाल	500/
वार्षिक संस्थागत	300/
वार्षिक व्यक्तिगत	250/

शब्दरंजन में विज्ञापन सहयोग कर अपने इस पत्र को और अधिक रंगदार, रूपवान तथा समाज विकास का अग्रणी प्रतिनिधि पत्र बनायें।

(**Shabd Ranjan**, UCO BANK, Bhupalpura Branch, Udaipur, a/c no. 18450210000908, IFSC no. UCBA0001845, a/c type- Current a/c)

कृपया रचनाएं व समाचार ई-मेल से भेजें तो सुविधाजनक शीघ्र प्राप्त होंगी।

shabdranjanudr@gmail.com

भाविक-दामिनी परिणय सूत्र में बंधे

18 अप्रेल को जानेमाने ज्योतिषाचार्य अनिल भानावत के भतीजे अरूण-आशा के सुपुत्र भाविक का शुभ विवाह बंबोरा निवासी राजेंद्रकुमार-रेखा जारोली की सुपुत्री दामिनी के साथ सम्पन्न हुआ। शब्द रंजन की हार्दिक बधाई।

गिट्स की सोलर कार राजस्थान में प्रथम

उदयपुर। गीतांजली इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्निकल स्टडीज के ऑटोमोबाइल इंजीनियरिंग, इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग तथा मैकेनिकल इंजिनियर के छात्रों ने मिलकर एक ऐसी कार डिजाइन की है जो सौर ऊर्जा तथा इलेक्ट्रिक ऊर्जा से चलती है। इस कार को सौर ऊर्जा और बैटरी दोनों के द्वारा संचालित किया जा सकता है।

संस्थान के निदेशक डॉ. विकास मिश्र ने बताया कि आंध्र के प्रदेश भीमावरम में आयोजित इलेक्ट्रिक सोलर व्हेकल चैम्पियनशिप में 76 टीमों ने भाग लिया जिसमें गिट्स द्वारा निर्मित सोलर कार को राजस्थान स्तर पर प्रथम, उत्तर भारत में द्वितीय तथा देश भर में पांचवा स्थान मिला है। विभागाध्यक्ष ऑटोमोबाइल दिप्ती खत्री के अनुसार इस सोलर कार का उद्देश्य प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करके एक ऐसे वाहन का निर्माण करना है जो स्मार्ट सिटी के तहत शून्य प्रदुषण वाहन के नाम से अपनी छाप छोड़ सके।

उल्लेखनीय है कि सोलर कार निर्माण करने वाली टीम को 'आई.एस.आ.ई. फ्यूचर अवार्ड एडवेंचर क्लास' द्वारा सम्मानित किया गया है साथ ही 50,000 रुपये का पुरस्कार मिला है। यह इलेक्ट्रिक सोलर कार एक बार पूर्ण चार्ज होने के बाद जबरदस्त पिक-अपके साथ 45 किलोमीटर प्रतिघंटा की अधिकतम रफ्तार से चलती है।

विद्यापीठ विवि के छात्रों का सऊदी अरब में प्लेसमेंट

उदयपुर। जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ डीम्ड टू विश्वविद्यालय, आईएलएफएस स्किल्स डवलपमेंट व स्किल इंक के संयुक्त तत्वावधान में प्रतापनगर परिसर में चल रहे स्कील डपलपमेंट कोर्स में अध्ययनरत तीन छात्रों को सऊदी अरब में प्लेसमेंट मिला है।

कुलपति प्रो. एस. एस. सारंगदेवोत ने कहा कि छात्रों को समय के साथ अपने आप को अपडेट रखने की आवश्यकता है अगर हम नई तकनीक के साथ नहीं जुड़े तो हम पिछड़ सकते है। विद्यार्थी लगन के साथ प्रशिक्षण सीखे तो कोई भी कार्य करना कठिन नहीं है। इस वर्ष कौशल विकास के सर्टिफिकेट डिप्लोमा व डिग्री कोर्स प्रारंभ किए जा रहे है जिनमें बैंकिंग एवं फाईनेंस, कृषि प्रबंधन व होटल प्रबंधन जिसमें शत प्रतिशत रोजगार की गारंटी रहेगी। प्रभारी विश्वभूषण मेहता ने बताया कि इन युवाओं को 40 हजार रूपये मासिक वेतन के अलावा कम्पनी द्वारा रहना, खाना, मेडिकल इंश्योरेंस तथा लोकल ट्रांसपोर्टेशन फ्री दिया जायेगा।

चांदी उत्पादन दोगुना करेगा हिंदुस्तान जिंक्र

उदयपुर। हिन्दुस्तान जिंक्र दुनिया की 10वीं सबसे बड़ी चांदी उत्पादक कंपनी है। इसके द्वारा भारत में 95 प्रतिशत प्राईमरी सिल्वर का उत्पादन किया जाता है। उत्तराखंड राज्य के पंतनगर में स्थित हिंदुस्तान जिंक्र की सिल्वर रिफाइनरी को 16 अप्रैल से चांदी उत्पादन के लिए लंदन बुलियन मार्केट एसोसिएशन की 'लंदन गुड डिलिवरी' सूची में शामिल किया गया है। जिंक्र की सिल्वर रिफाइनरी भारत की तीसरी रिफाइनरी है।

जिंक्र के मुख्य कार्यकारी अधिकारी सुनील दुग्गल ने बताया कि वित्तीय वर्ष 2017-18 में जिंक्र ने रिकॉर्ड 556 टन चांदी का उत्पादन किया है। कंपनी 30 किलोग्राम की सिल्लियों के रूप में चांदी की बिक्री करती है। आगामी 3-4 वर्षों में 1,000 टन चांदी उत्पादन करने का लक्ष्य है। घरेलू बाजार में, डिजिटल लहर, सौर ऊर्जा उत्पादन एवं आगामी इलेक्ट्रिक वाहन बाजार की वजह से चांदी की मांग में वृद्धि होगी।

प्रख्यात समाजशास्त्री योगेश 'अटल' नहीं रहे

जानेमाने समाजशास्त्री डॉ. योगेश 'अटल' मूलत: उदयपुर निवासी थे। सन् 1937 में जन्मे डॉ. अटल ने सागर विश्वविद्यालय से समाजशास्त्र में एम.ए. तथा पीएच.डी. की। प्रारम्भ से ही वे तीक्ष्ण बुद्धि के थे। मेवाड़ी, हिन्दी, अंग्रेजी के अलावा उर्दू, फ्रेंच, थाई तथा इंडोनेशियाई भाषाओं के अच्छे जानकार थे। वे अच्छे कवि थे। उदयपुर में अध्ययन के दौरान कवि के रूप में उनकी अच्छी पहचान बन चुकी थी। नंद चतुर्वेदी, प्रकाश आतुर, वृद्धिशंकर त्रिवेदी 'शिल्पी' के साथ अटलजी भी कवि-मंचों पर छाये रहते थे।

कानोड़ में हमने भी 6 जून 1956 को जब कुमार साहित्य परिषद की स्थापना की थी तब एक कवि सम्मेलन में उन्हें बुलाया गया था। उदयपुर में तब अटलजी जागृत साहित्य परिषद चलाते थे जिसके वे मंत्री थे। कानोड़ में तब और भी कवि बाहर से आमंत्रित किये गये थे। यहीं उनसे मेरा परिचय बना जो घनिष्ट होता रहा। जब मैं छोटीसादड़ी गुरुकुल में 9वीं-10वीं में पढ़ा था तब हमारे बीच पत्रों का अच्छा आदान-प्रदान शुरू हो गया था। बीकानेर से बीए पास कर जब मैं 1958 में उदयपुर आया तब नंद बाबू के साथ फूटा दरवाजा से लगे उनके निवास की ऊपरी मंजिल में मिलता रहा।

सन् 1974 में वे यूनेस्को में शामिल हुए जहां से 1997 में प्रमुख निदेशक के रूप में सेवानिवृत्त हुए। इस बीच एकबार वे भारतीय लोककला मंडल आये थे तब देवीलाल सामरजी और मैंने उन्हें कला-संग्रहालय के साथ-साथ हमारे द्वारा किये जा रहे कार्यों की जानकारी से अवगत कराया। उन्होंने तब यह कहा था कि जो कार्य यहां हो रहा है वह बड़ा महत्वपूर्ण, मौलिक और मूल्यवान है। जीवन के आखिरी पड़ाव में वे भी कुछ ऐसा ही कार्य करना चाहेंगे जिसमें उनकी पूर्ण दिलचस्पी है।

लेकिन जो व्यक्ति अपने अंचल से उठ खड़ा होता है उसके लिए बाहरी आवरण ही बड़ा आकर्षक और लुभावना होता है और वहीं वह बड़ा भी बना रहता है। यह भी सत्य है कि कुछ अच्छे और बड़े कार्य के लिए व्यक्ति को अपना घर छोड़ना पड़ता है अन्यथा उतना बड़ा काम उससे नहीं हो पाता है। बहरहाल मेरी भेंट फिर उनसे कभी नहीं हो पाई। स्मृतिशेष आत्मा को शब्द रंजन की शोकांजलि।

अनंत में विलीन कवि अनंतजी

बनेड़ा में 14 अक्टूबर 1922 को जन्मे विजयनगर के निवासी कन्हैयालाल 'अनंत' का पिछले दिनों अनंत में विलीन होना दुखद खबर है। वहां के कवि डॉ. खटका राजस्थानी ने मुझे जब यह खबर दी तो मेरे अग्रज डॉ. नरेन्द्र भानावत मुझे याद आ गये जब वे छोटीसादड़ी गुरुकुल में 1951-52 में अध्ययनरत थे और अनंतजी हिन्दी के अध्यापक थे। वह समय गुरुकुल का स्वर्णकाल था। अनंतजी अच्छे कवि थे जिनका काव्य-सृजनीय प्रभाव भाई साहब और अन्यत्रों पर भी पड़ा। उसके बाद मैं भी गुरुकुल में पढ़ने गया पर तब तक अनंतजी ने उसे छोड़ सरकारी अध्यापकी जॉइन कर ली थी।

गुरुकुल के रजत जयंती समारोह पर मैं भी गया था। एक हल्की सी स्मृति है। एक नाटक खेला गया था तब अनंतजी ने उसमें कर्मावती की भूमिका दी थी। वह कवि सम्मेलन भी याद है जिसमें मध्य भारत के हास्य कवि कुंजबिहारीलाल पांडेय ने 'आगरे में रूक गई ट्रेन चीखती हुई' कविता पढ़ी थी और उदयपुर से युवा कवि डॉ. प्रकाश आतुर बुलाये गये थे। भाई साहब ने भी तब 'महल के पाषाण कुंठित कुटीर कंकड़ आज मचला' कविता पढ़ी थी। यह कविता इसलिए सराही गई कि एक छात्र की रचना थी। तब से मैं अनंतजी को याद करता रहा हूं। डॉ. खटका ने भाई साहब के निर्देशन में पीएच.डी. की थी इसलिए वे मेरे भी नजदीक आ गये। वे जब भी मिलते, मैं अनंतजी के लिए पूछता। वहीं के नेमिचंद सुराणा थे जो गुरुकुल में वर्षों तक प्रधानाध्यापक रहे। वे बड़े सुदर्शनीय, सर्व हितचिंतक, प्रतिभा पारखी तथा अपने व्यक्तित्व में सबसे निराले टिपिकल थे और सबमें लोकप्रिय आदर्श लिए थे।

अनंतजी महात्मा गांधी के आह्वान पर 1942 में जेल गये। विनोबाजी के प्रभाव में आकर उन्होंने भूदान यज्ञ सम्बन्धी गीतों का 'नये चरण' और 'युग सृजन के स्वर' जैसे राष्ट्रीय भावनाओं से ओतप्रोत प्रकाशन दिये। उन्होंने ज्वाला से ज्योति नाटक के अलावा भगवत गीता का पद्यानुवाद भी किया। वे अपने जीवन के अंतिम चरण तक काव्य-सृजन करते रहे। पुरानी चाल के कवियों में वे बराबर अपनी पहचान बनाये रहे। डॉ. खटका ने कहा कि वे विजयनगर की रौनक के साथ-साथ हम जैसे काव्य-सर्जकों के आदर्श गुरुतुल्य थे। -म.

कौशल प्रतियोगिता का आयोजन

उदयपुर। राजस्थान में कौशल विकास को बढ़ावा देने के उद्देश्य से भारत स्किल डेवलपमेंट यूनिवर्सिटी- बीएसडीयू ने राजस्थान राज्य स्तरीय कौशल प्रतियोगिता का आयोजन किया। माध्यमिक और उच्च माध्यमिक स्तर पर छात्रों को व्यावसायिक शिक्षा देने की सरकार की प्रायोजित योजना के साथ 11 जिलों के 70 विभिन्न कौशल स्कूलों के छात्रों ने राजस्थान माध्यमिक शिक्षा परिषद के सहयोग से आयोजित इस राज्य स्तरीय कौशल प्रतियोगिता में भाग लिया। प्रतिस्पर्धा में जिन छात्रों ने भाग लिया, वे व्यावसायिक शिक्षा के लेवल 4 (कक्षा 12 वीं) को पूरा कर चुके हैं और ऑटोमोबाइल, ब्यूटी एंड वेलनेस, हैल्थकेयर और आईटी जैसे विभिन्न ट्रेड में पढ रहे हैं।

राजस्थान माध्यमिक शिक्षा परिषद की स्टेट प्रोजेक्ट डायरेक्टर सुश्री आनंदी के अनुसार राज्य स्तरीय कौशल प्रतिस्पर्धा में कुल 700 विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया। इवेंट के दौरान, कौशल प्रतियोगिता में भाग लेने वाले छात्रों को एक लिखित परीक्षा से गुजरना था जहां 12 छात्रों को छात्रवृत्ति दी जाएगी। यह छात्रवृत्ति उनके पूरे बी. वोक पाठ्यक्रम के शिक्षण शुल्क को कवर करेगी, बशर्ते वे 8 या उससे ऊपर का सीजीपीए बनाए रखें। इस अवसर पर बीएसडीयू के कुलपति डॉ (ब्रिगेडियर) एस एस पाब्ला ने छात्रों को उनके संबंधित करियर के बारे में मार्गनिर्देशन किया। कौशल प्रतियोगिता के दौरान, राजस्थान माध्यमिक शिक्षा परिषद के सहायक निदेशक नरेंद्रकुमार जैन, योगेश उपाध्याय, विनोद राव शिन्दे और योगेश जोशी ने बीएसडीयू द्वारा समय-समय पर उठाए गए विभिन्न नए कदमों और इसके पाठ्यक्रम की सराहना की।

आयुष्मान व भूमि वी-मार्ट के ब्रांड एंबेसडर

उदयपुर। वी-मार्ट रिटेल लि. ने बॉलीवुड की सुपर हिट जोड़ी आयुष्मान खुराना और भूमि पेडनेकर को अपना ब्रांड एंबेसडर बनाया है। आयुष्मान खुराना ने कहा कि वी-मार्ट रिटेल लि. भारत में सबसे तेजी से बढ़ रहे मूल्य खुदरा विक्रेताओं में से एक है और मुझे ब्रांड एंबेसडर के रूप में उनके साथ जुड़कर खुशी हो रही है। यह वेल्यू-रिटेलर देश के कई समृद्ध क्षेत्रों में फैशन को नया स्वरुप दे रहा है। भूमि पेडनेकर ने कहा कि मैं वी-मार्ट स्टोर्स पर दी जाने वाली विशाल रेंज और टीयर 2, 3 और 4 सिटी में ब्रांड की पहुँच देखकर हैरान थी। महानगरों से दूर रहने वाले युवा और महत्वाकांक्षी मध्यम वर्ग के लिए अविश्वसनीय कीमतों पर नवीनतम फैशन डिजाइन प्रदान करने वाले ब्रांड के साथ जुड़ना वास्तव में रोमांचक है।

वी-मार्ट रिटेल लि. के सीनियर वी.पी.-मार्केटिंग एंड ऑपरेशंस स्नेहल शाह ने कहा कि वर्ष 2003 में डिपार्टमेंटल स्टोर शुरू करने वाले वी-मार्ट रिटेल लि. अपने उपभोक्ताओं की सभी फैशन और जीवनशैली आवश्यकताओं के लिए सबसे पसंदीदा स्थलों में से एक बन गए हैं। 14 राज्यों के 148 शहरों के 175 स्टोर्स की मौजूदगी के साथ, वी-मार्ट हर साल लगभग चार करोड़ ग्राहकों की फैशन सम्बन्धित मांग को पूरा करता है। इस ब्रांड में 75 लाख ग्राहक उसके लॉयल्टी प्रोग्राम के साथ रजिस्टर्ड हैं जो उपभोक्ताओं के बीच मजबूत ब्रांड अपील का प्रमाण है।

स्टेम सेल थेरेपी ने लौटाई हिबा के जीवन में खुशियां

उदयपुर। स्टेम सेल थेरेपी ऑटिज्म, सेरेब्रल पाल्सी, ग्लोबल डेवलपमेंटल डिले और अन्य न्यूरोलॉजिकल विकारों के उपचार में नए क्रांतिकारी विकल्प के रूप में उभर रही है। इसमें स्टेम सेल को विशेषज्ञ

चिकित्सकों की देखरेख में शरीर के उस हिस्से में इंजेक्ट किया जाता है जो रोगग्रस्त हैं। इसके बाद स्टेम सेल उस अंग की खुद-ब-खुद मरम्मत शुरू कर देती है और व्यक्ति स्वस्थ्य हो जाता है। इस नए जीवनदायी चिकित्सा विज्ञान से कई असाध्य रोगों का सटीक उपचार हो रहा है। यह जानकारी प्रेसवार्ता में देश के जाने-माने स्टेम सेल थेरेपी केंद्र न्यूरोजेन ब्रेन एंड स्पाइन इंस्टीट्यूट की उपनिदेशक व चिकित्सा सेवाओं की प्रमुख डॉ. नंदिनी गोकुलचंद्रन ने व्यक्त किए।

उन्होंने बताया कि न्यूरोजेन की ओर से असाध्य न्यूरोलॉजिकल विकारों से जूझ रहे राजस्थान के मरीजों के लिए उदयपुर में 13 मई को 'नि:शुल्क स्टेम सेल थेरेपी' शिविर का आयोजन किया जाएगा। नि:शुल्क कार्यशाला भी होगी। इसका मकसद स्पाइनल कॉर्ड इंजुरी, मस्क्युलर डिस्ट्रॉफी, ऑटिज्म, सेरेब्रल पाल्सी इत्यादि विकारों से पीड़ित मरीजों को स्थानीय स्तर पर नि:शुल्क परामर्श प्रदान करना है। कई बार सिर्फ परामर्श के उद्देश्य से मरीजों को मुंबई तक की यात्रा करना काफी तकलीफदेह हो जाता है, इसलिए मरीजों की सुविधा के लिए शिविर का आयोजन किया जा रहा है। असाध्य न्यूरोलॉजिकल विकारों से पीड़ित मरीज इस नि:शुल्क शिविर में परामर्श के लिए समय लेने के लिए मोना 09920200400 या पुष्कला 09821529653 से संपर्क कर सकते हैं।

डॉ. नंदिनी ने बताया कि ग्लोबल डेवलपमेंट डिले से प्रभावित बच्चों के लिए न्यूरोजेन ब्रेन एंड स्पाइन इंस्टीट्यूट स्टेम सेल थेरेपी उपचार की नई उम्मीद है। पैदा होने वाले हर एक हजार बच्चों में से एक से तीन बच्चे ग्लोबल डेवलपमेंट डिले से प्रभावित हो सकते हैं। स्टेम सेल थेरेपी के बाद उदयपुर की पांच वर्षीय हिबा खान अपने परिवार के सदस्यों को पहचान पाने में सक्षम हैं। हिबा माइक्रोसैली के साथ ही ग्लोबल डेवलपमेंट डिसऑर्डर से पीड़ित थीं। जन्म के ठीक बाद वह रोई नहीं, उसकी सभी प्रेरक पेशियों के विकास में विलंब हुआ। लगभग 1 वर्ष की उम्र में उसे बच्चों के विशेषज्ञ के पास ले जा गया व बार-बार बीमार होने के कारण उसके एमआरआई परीक्षण की सलाह दी गई। जांच में दिमागी विकृति के संकेत सामने आए। हिबा के अभिभावकों को जब यह पता चला कि स्टेम सेल थेरेपी के जरिए बच्ची का इलाज संभव है। न्यूरोजेन ब्रेन एंड स्पाइन इंस्टीट्यूट में हिबा का स्टेम सेल थेरेपी उपचार शुरू हुआ। उसे ऐसी एक्सरसाइज बताई गई जिससे समझ में सुधार लाने और व्यवहार, संवेदी व प्रेरक पेशियों के संचालन (मोटर-संबंधी) की दक्षता में मदद मिली। अनुभवी पेशेवरों के मार्गदर्शन में उसे व्यावसायिक चिकित्सा, फिजियोथेरेपी, स्पीच थेरेपी और मनोवैज्ञानिक परामर्श दिया गया। उसके घर जाने के बाद भी न्यूरोजेन में बताए गए व्यावसायिक चिकित्सा और पुनर्वास को जारी रखा गया। इस थेरेपी के बाद हिबा वस्तुओं और अपने परिवार के सदस्यों को पहचाने लगी। उसका व्यवहार सौम्य हो गया, ऊपरी और निचले अंगों की मुद्रा और समग्र शक्ति में सुधार हुआ है। चाल बेहतर हुई, लेटने, बैठने और खड़े रहने की सहनशीलता में सुधार हुआ। हिबा की नानी शकीला खान ने बताया कि इस उपचार ने हिबा की जिंदगी को फिर से नई रोशनी से भर दिया है।

पवन कौशिक को 'सीएसआर पर्सन ऑफ द ईयर अवार्ड'

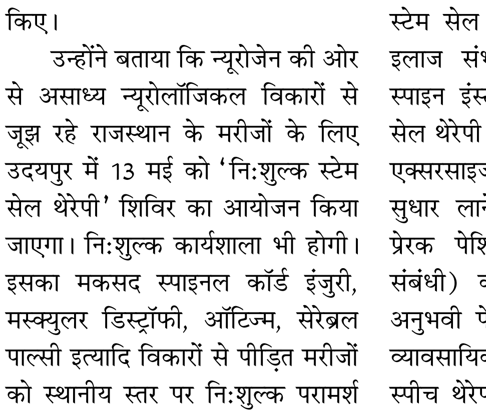

हिन्दुस्तान जिंक के हेड-कार्पोरेट कम्यूनिकेशन पवन कौशिक को इण्डिया सीएसआर लीडरशिप समिट ने सुरक्षा के प्रति जागरूकता अभियान 'बी सेफ' के लिए 'सीएसआर पर्सन ऑफ द ईयर अवार्ड-2018' से सम्मानित किया है। कौशिक अब तक राजस्थान में करीब साढ़े तीन हजार से अधिक कर्मचारियों, स्कूली बच्चों और परिजनों को सुरक्षा के प्रति जागरूक कर चुके है। उल्लेखनीय है कि इस कार्यक्रम में केन्द्रीय सड़क एवं परिवहन मंत्री नितीन गड़करी, राजस्थान सरकार के अनेकों मंत्री, राजस्थान के विभिन्न जिलों के जिला कलेक्टर एवं पुलिस अधीक्षक तथा उदयपुर के अरविन्द सिंह मेवाड़ जुड़ चुके हैं।

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।